

111352

नई तालीम

सन १८३६ ई० = जनवरी, फरवरी, मार्च, मई, अगस्त
सितम्बर, अक्टूबर, नोवेंबर, दिसम्बर
सन १८४४ ई० = जनवरी, अप्रैल, मई, जून,
अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नोवेंबर,
दिसम्बर

❀ ओईम ❀

पुस्तक-संख्या

पंजिका-संख्या

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां
लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से
अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख
सकते। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः
आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

~~11352~~

11352



111352

नई तालीम

[हिन्दुस्तानी तालीम विषय पर]

संपादिका — माशा देवी

जनवरी, १९३९

संख्या १

आगे

नई तालीम का नयापन समझना जरूरी है। पुरानी तालीम में जितना अच्छा है वह नई तालीम में भी रहेगा, लेकिन उसमें नयापन काफी होगा। नई तालीम अगर सचमुच नई होगी तो उसका नतीजा यह होना चाहिये कि हमारे घरों में पढ़ाई की जगह उम्मीद होगी, कंगालियत की जगह रोटी का सामान तैयार होगा, बेकारी की जगह धंधा होगा, झगड़ों की जगह एका होगा और हमारे लड़के लड़कियां लिखना पढ़ना जानेंगे और साथ ही अपने भी जानेंगे जिसके माप में वे अक्षरज्ञान हासिल करेंगे।

मो. क. गान्धी।

शिक्षा पद्धति पर विचार

मनुष्य की शारीरिक और मानसिक सब प्रकार की शक्तियों में उसमें एक अखण्ड संबंध है। वे एक दूसरे के सहयोग से सबल होती हैं।

मांग्य से आजकल की शिक्षा पद्धति में हम साधारण कित्तियों में लिखे हुए कुछ विषयों को पुनः पुनः संसार के और सार ज्ञान को उन्नीकार कर देते हैं। पश्चिमी देशों के विद्यालयों में जो पढ़ाई होती है वह वे बाहर के जीवों द्वारा पूरी हो जाती है। पर हमारे देश में तो स्कूल कालेज के बाहर शिक्षा के लिये कोई जगह या साधन है ही नहीं, ऐसा कहना चाहिये। इसलिये जो पढ़ाई केवल नोट लेकर और रटकर के होती है वह उनके दिमाग पर जितना बोझ डालती है उतना धन नहीं करता।

शिक्षा और साथ साथ न केवल शिक्षा की प्रगति में भी तेजी नहीं आती। हम हमारे विद्यालयों में बच्चों से विद्यार्थियों को जड़-बुद्धि और उदासीन देखते हैं। इसका एकमात्र कारण यही है कि शिक्षा के सिलसिले में उनके शरीर की मांग के लिये कोई जगह नहीं होती। तबियत का पूरा पूरा ध्यान नहीं रहता। यह दैन्य आता है।

जानने को करना को खेल कवायद की चर्चा नहीं है। मेरा मतलब है उन विद्वानों को जो अपना गौरव समझते, उनके शरीर से सहाय्य रहता है। इसी चर्चा से शरीर शिक्षित होता है। प्रमत्त और उनकी सेवा के जरिये खुद। ऐसे कर्म को व्यवस्थित रूप से करने में उनके साथ मन के योग दोनों में मदद पड़ती है।

आवश्यक स्वातंत्र्य पद्धति में हर एक विद्यार्थी को किसी न किसी कुशल दत्ता देना चाहिये। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि ऐसी किसी शारीरिक कला की चर्चा से जानने की सजीव और सतेज प्रवृत्ति उत्पन्न हो। जिन विद्यार्थियों को हम बुद्धिहीन या मोटी शक्ति बंधु या दौड़ या दस्तकारी की शिक्षा से ही शिक्षा की अवस्था में रखते हैं। इससे अलावा जिस के शरीर

की शिक्षा नहीं हुई है, वह कितना ही बड़ा पंडित क्या न हो, दुनिया को ज्यादातर अपने ऊपर दूसरे के ऊपर निर्भर रहकर जीना पड़ता है। वह अपने अनुप्य है। हमें अपने बच्चों को इस अपूर्णता से बचाना ही होगा। इसमें हमें किन्हीं आभिव्यक्ति से बाधा जरूर मिलनी, लेकिन इस रुकावट को मान लेना हमारे लिये उचित नहीं है।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि देह की शिक्षा के साथ मन की शिक्षा सचलता के साथ मन की सचलता का गहरा संबंध है। दोनों के बीच में अच्छा तार होना पर हमारे जीवन का नुकसान ही टूट जाता है।

शांतिनिकेतन

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

नई तालीम : नई जिंदगी

नई तालीम नई जिंदगी का पैगाम है। मगर कैसी नई जिंदगी? वह नई जिंदगी नहीं, जिसकी उम्मीद के कानून-कागदें बदलवानेवाले दिलाते हैं। इससे रास्तों की एक रुकावट जरूर पड़ेगी और गगने चला आसान हो जायगा। पर बहुत अच्छे कारनवाले देश भी दूसरे देशों का बरबाद करते रहे हैं, और अपनी आबादी के लिए औरों को उजाड़ते रहे हैं। वह नई जिंदगी भी नहीं, जिसमें दोलत कमाना आसान हो जायगा; इसलिए कि रुपये-पैसे से आराम भी खरीदा जाता है और रोग जी। यह नई जिंदगी खाली पेट भरने का उत्सव ही नहीं होगी, इसलिए कि आदमी खाली रोटी से नहीं पेटा, और यह भी होता है कि अपना पेट भरने के लिए दूसरे का पेट काटा जाता है। यह नई जिंदगी दुनिया को इस तरह न बदलेगी कि उतरे चलने से आदमी अच्छे बन जायें। पर यह आदमी का इस तरह बदलेगी और सँवारेगी कि फिर इसकी दुनिया आपही आप बदल जाय। यह आँख को न रोशनी देगी कि जिधर देखे उजाला कर दे। यह आँख को वह सफाई देगी, जो दिल को भी साफ बना दे। यह मन के पीसीनेकी बँद को मोती बना देगी। अच्छे, और धुन के मक आदमी बनायेगी, जो नव के साथी हो और बुराई के दुश्मन। जो अपने बत मजदूरी से कह सकें और दूसरों की सत्र से सुन सकें। जो अपने परोपर खड़े हो सकें और दूसरों का सहारा भी बन सकें।

मैंने नई तालीम को नई जिंदगी का पैगाम कहा, तो पूरी बात नहीं कही। यह नई जिंदगी का वादा भी है। ऐसा वादा जो पूरा हो जाय, तो दुनिया, खुददारा, स्वाधीन, राजादी सभी नसीब हो जाय, लेकिन यह वादा किसने किया और किससे किया? यह वादा नई तालीम का काम करनेवाले एक दूसरे से करते अपने अपने मुल्य की नई पौदा से करते हैं। हम अपने मदरसों में आदमी की सूरत का इस तरह बिगड़ते देखते कि रोना आ गया है, कहीं हमने देखा कि सर इतना बढ़ गया कि हाथ-पाँव

सूख गये हैं। कहीं हाथ-पाँव मजबूत देखे, खाली और आँख को अंधा पाया। नई जिंदगी के असल रोग हैं। और हम नई तालीम करे वाले एक दूसरे से वादा करते हैं कि मिल कर दूसरे का हाथ बँटाकर सुडौल बदन जागता हुआ सोचने वाला भाग और अपनी और समाज की दुस्खी सच्चा शौक रखनेवाले नौजवान पैदा करेंगे जो दम लेंगे, जब ऐसे हाथ में ले लें और हमें

यह परचा "नई तालीम" कि जो लोग आपस में यह काम को जान सकें, एक के तजल्बे एक से दूसरा मदद ले सकें, और रहे कि बुनियादी तालीम का जो कारोबार है, वह किस तरह चला रहा है।

जाकिर

नई और हिंदुत्वियों में

हिन्दुस्तान में तालीम को राष्ट्रीय जरूरतों के मुताबिक गान्धी ने शुरू किया है, उ वृत्त को नह जा बाकी रहग

पुरानी तालीम

नई तालीम

इसका

स के पलों

सिर्फ बन्द आँखों तक महसूस नहीं
सारे हिन्दुस्तानियों को बाँधे का मुँह
उसकी उसकी
और प

बाग ^न पड़गा, ^न ^{वा} ^{आवश्यक} स्वातंत्र्य ^{ना}
 गों उठ ^{है} ^x ^{री} ^क
 ही नहीं है। ^क
 जाय ^{जाना} ^न ^{सृ} ^{जीव} और ^{सतेज} ^{निक}
^न ^{सात} ^{हु}

उत्पादक संस्थानों में बैठकर लोगों का वायुमण्डल पदो
नहीं कर सका, तो ये भीना जायगा कि बड़े वर्ग
को भी काम में लाना होगा। के-रा
ए-पद-...
इस तीन घंटे की मिनट में जो उत्कृष्ट और
जो कि शिक्षा के लिए सब से अच्छे के लिए

लीप
नई तारीख

[१ जनवरी १९३९]

सूचना:- हिसाब तोलों में रखना सुविधाजनक है। कारण

[देखिये नमूना नं० ६]

रुई इत्यादि देते समय १॥ तोला या तोला आदि कलमें छटाक या सेर में कठिन होता है।

वर्ग नौद के २ विभाग होते हैं:- (१) शिक्षक- (२) वर्गबही (३) गलेख

विद्यार्थी- (१) काम का तख्ता (२) आलेख

[तरीके के लिए देखें

औसत गति

घंटे की गति

धुनाई

शिक्षक (१) वर्गबही में:- हर एक विद्यार्थी के काम, गति तथा कक्षा के दुर्गम और असत गति की ब्यौरा रहेगा।

[देखिये नमूना नं० ७]

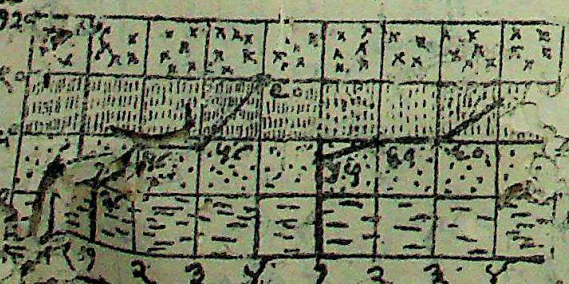
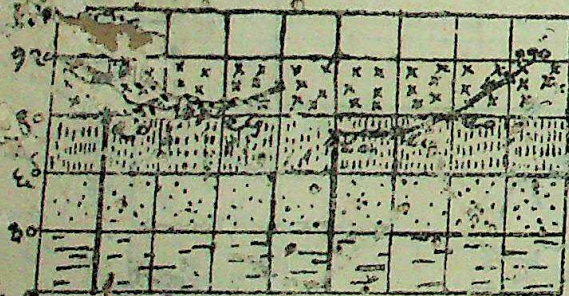
गति दर्शित करेगा।

३. खाताबही:- इस

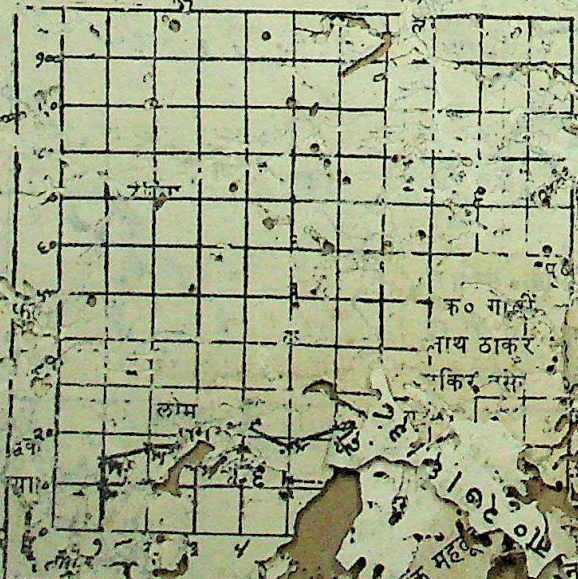
ब्यौरा ली जायेगी

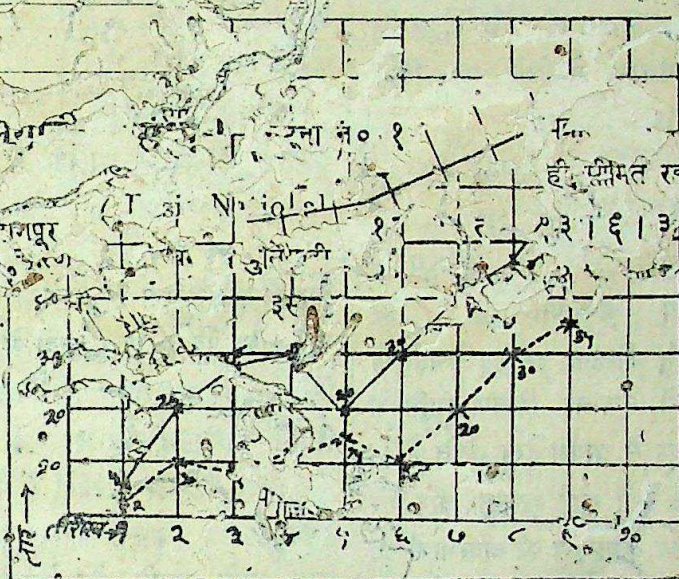
कताई					धुनाई		कुल	की घंटा	घट
वजन	अंक	कस	कपात	मजदूरी	तोले	मजदूरी	मानदूरी	मजदूरी	%
पुवाड									
उत्तराड									

कक्षा पहली: वैयक्तिक, साप्ताहिक, मासिक
गति-आलेख
नमूना नं० ८ अ
सितम्बर



शिक्षक, सूत-बन्द
नमूना नं० ९
X.....X बायाँ हाथ
X.....X दायाँ हाथ



[illegible]

प्र. पु. वि. म. वि. हारी. कक्षा ३. म.

चार्ट नं० ३

विद्यार्थी ही सहयोग

पर जोर से जादू-विजाद हो रहा था, तब दूसरी तरफ
इसका बीज बोया जा रहा था।

का की शेर से वर्धा में जो दिव्यामन्दिर-
३०० त्रिंशत् वर्षों के इस राजा का सबसे
पहले बना हुआ।

प्राप्त होता है कि वह विभाग के अंतर्गत है या नहीं। यदि हाँ तो उसे आगे बढ़ाया जाता है। अन्यथा उसे वापस ले लिया जाता है।

नहीं है। सत्य देन
जाता है। सजीव और सत्य के वागप

का
आभा

की अ

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

विद्यामन्दिर-ट्रेनिंग स्कूल की स्थापना के बाद दिल्ली के जामिया मिलिया में, मछलीपट्टम् के राष्ट्रीय विद्यापीठ आन्ध्र जातीय कला-शाला में, बिहार सरकार की पोरसे पटने में, युक्त-प्रान्त की सरकार की और शिक्षक-ब्रह्मद में और काश्मीर सरकार की ओर से श्रीनगर में बुनियादी तालिम की पॉज और शिक्षण-संस्थाएँ स्थापित हुईं। मद्रास, बम्बई और उड़ीसा, इन तीन प्रान्तों की शिक्षण-संस्थाओं के भी अध्यापक इस समय अपने काम के लिये तैयार हो रहे हैं और शीघ्र ही इन प्रान्तों में भी बुनियादी तालिम के अध्यापन-मन्दिर खोले जायेंगे। साथ ही गुजरात, मैसूर राज्य और मध्यप्रान्त में भी देहाती पाठशालाओं में भी इसका प्रयोग प्रारम्भ हुआ है।

इसलिये मेरी समझ में इस शिक्षा-योजना पर सैद्धान्तिक
 इच्छा करने का समय अब नहीं रहा। अब तो धैर्य
 और एकनिष्ठा के साथ इसके प्रयोग और परीक्षण का समय
 आया है। इसका प्रारंभ की सिद्धि में हाथ बँटाने लिये सब
 शिक्षकों और सेवकों से सहयोग का प्रार्थना है। आशा है,
 यह छोटी शिक्षा संस्था मेरी सहयोगियों की साहजिक
 सफलता होगी।

शिक्षा-विभाग के २२ प्रतिनिधि इस संक्षिप्त ट्रेनिंग कोर्स में शामिल हुए हैं। इनके अलावे कुछ मिशनरी संस्थाओं से और कुछ गैर-सरकारी राष्ट्रीय संस्थाओं से भी चंद प्रतिनिधि इकट्ठे हुए हैं। सब मिलाकर प्रतिनिधियों की संख्या ६२ है।

ता० १६-१-३९ से ९ बजे सवेरे श्री० काका साहब साहू की अध्यक्षता में बुनियादी राष्ट्रीय तालीम के इस संक्षिप्त पाठ्यक्रम का प्रारंभ हुआ।

इस संक्षिप्त पाठ्यक्रम का 'साधारण कार्यक्रम' इस तरह से रखा गया है कि बुनियादी तालीम के सिद्धान्त और प्रयोग दोनों से प्रतिनिधियों का इस थोड़े समय में, कुछ परिचय हो सके। कार्यक्रम इस तरह से रखा गया है—

सवेरे—

७-३० बजे से-९ बजे तक कताई और अवलोकन।

९ बजे से-१०। बजे तक व्याख्यान और बहस।

दोपहर—

२-१५ बजे से-३। बजे तक कताई।

३-१५ बजे से-४। बजे तक व्याख्यान और बहस।

देखने जाना—

१८ वीं जनवरी अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ, के सदर मुकाम में।

१९ वीं जनवरी नाबवाड़ी आश्रम।

२० वीं जनवरी सेगांव की ग्रामीण पाठशाला, हिन्दुस्तानी तालीम संघ का सदर मुकाम।

२९ वीं जनवरी पौनार।

व्याख्यानों का कार्यक्रम।

सवेरे

दोपहर

७ बजे से १०। तक १५ बजे से ४। तक

१६ वीं जनवरी प्रारंभिक भाषण— "महात्मा गांधी के कार्य-काका साहब कालेलकर क्रम की एकता।"—आचार्य जे. बी. कृपलानी

१७ वीं जनवरी राष्ट्रीय शिक्षा के बुनियादी उद्देश्य—खबर का अर्थशास्त्र—आचार्य कृपलानी श्री. आर्यपायकम

१८ वीं जनवरी अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ के सदर मुकाम—बुनियादी पाठ्यक्रम—आशा देवी

१९ वीं जनवरी अखिल भारतीय ग्रामोद्योग-संघ के बुनियादी उद्योग-संघ के बुनियादी सिद्धान्त—श्री. जे. सी. कुमारप्पा

२० वीं जनवरी बुनियादी दस्तकारी के रूप में कताई—श्री० श्रीकृष्णदासजी जाजू श्री० बल्लभ भाई झेल

२१ वीं जनवरी रोटी के लिये श्रम—श्री० विनोबाजी (नालवाड़ी) बुनियादी दस्तकारी के रूप में कताई—श्री० बल्लभभाई पटेल

२२ वीं जनवरी बुनियादी दस्तकारी—दफती, लकड़ी और धातुओं के काम—श्री० लक्ष्मीश्वर सिंह

२३ वीं जनवरी बुनियादी पाठ्यक्रम—मातृभाषा—आशादेवी बुनियादी तालीम में हिंदुस्तानी का स्थान—काकासाहब कालेलकर

२४ वीं जनवरी बुनियादी पाठ्यक्रम—गणित—श्री० एन्. के. अहिर्जर बुनियादी पाठ्यक्रम—साधारण विज्ञान—श्री० एम्. ए. बंगवाले

२५ वीं जनवरी बुनियादी पाठ्यक्रम—सांख्यिक अध्ययन—आशा देवी बुनियादी तालीम—उंची तालीम—काकासाहब कालेलकर

२६ वीं जनवरी बुनियादी तालीम का स्वावलंबी पहलू—श्री० विनोबाजी (पौनार) बुनियादी दस्तकारी—खेती—श्री० एम्. आर. मिसे

२७ वीं जनवरी बुनियादी तालीम का स्वावलंबी पहलू—श्री० विनोबाजी (पौनार) बुनियादी दस्तकारी—खेती—श्री० एम्. आर. मिसे

२८ वीं जनवरी बुनियादी तालीम का स्वावलंबी पहलू—श्री० विनोबाजी (पौनार) बुनियादी दस्तकारी—खेती—श्री० एम्. आर. मिसे

२९ वीं जनवरी बुनियादी तालीम का स्वावलंबी पहलू—श्री० विनोबाजी (पौनार) बुनियादी दस्तकारी—खेती—श्री० एम्. आर. मिसे

३० वीं जनवरी बुनियादी तालीम का स्वावलंबी पहलू—श्री० विनोबाजी (पौनार) बुनियादी दस्तकारी—खेती—श्री० एम्. आर. मिसे

३१ वीं जनवरी बुनियादी तालीम का स्वावलंबी पहलू—श्री० विनोबाजी (पौनार) बुनियादी दस्तकारी—खेती—श्री० एम्. आर. मिसे

३२ वीं जनवरी बुनियादी तालीम का स्वावलंबी पहलू—श्री० विनोबाजी (पौनार) बुनियादी दस्तकारी—खेती—श्री० एम्. आर. मिसे

[फरवरी, १९३९]

नई तालीम

ली बुनियादी ट्रेनिंग स्कूलों बुनियादी ट्रेनिंग स्कूलों
फरवरी और प्रैक्टिसिंग स्कूलों और प्रैक्टिसिंग स्कूलों
बुधवार के प्रयोगात्मक कार्य- के प्रयोगात्मक कार्य-
श्री० यू. एस. तोमर श्री० यू. एस. तोमर

निगरानी और देखभाल- प्रबन्ध और आर्थिक-
श्री० एम्. ए. बंवावाले व्यवस्था-
श्री० डी. फ़. मोहनी

बुनियादी मदरसे- शिक्षा-संबंधी साहित्य-
श्री० आर्यनाथकर्म आशादेवी

सगांव में गांधीजी से आर्य बहस-
फरवरी मुलाकात मुलाहसे

(२) मध्य प्रदेश की डिस्ट्रिक्ट कौन्सिलों के शिक्षण-शिक्षकों की तैयारी ।

पहले बतलाया गया है कि मध्य प्रदेश के वर्धा में जो अध्यापन-मन्दिर खोला गया था, उसीसे बुनियादी-तालीम के प्रयोग का प्रारंभ हुआ। उसी तरह यह भी कहा जा सकता है कि बुनियादी तालीम के शिक्षक भी सब से पहले मध्यप्रान्त में ही तैयार होकर निकले। अप्रैल १९३८ में जो १६० विद्यार्थी भर्ती किये गये थे वे तैयार होकर, जून १९३९ के पहले अपने-अपने वर्धा, नागपुर, ग्वाल्तर और जबलपुर के नव जिलों की डिस्ट्रिक्ट कौन्सिलों के स्कूलों में काम शुरू किये हैं। इनमें से प्रत्येक को अपनी शिक्षा के प्रयोग के लिये ये चीजें दी गई हैं:—
(१) ४० नकली (२) ३५ अटेन (या लपेटे) (३) १ कर्करपट्टी (या गोजन) (४) १ तांत (५) १ कर्करपट्टी (या गोजन) (६) १ धुनकने की छड़ (७) १ पोनी पाट (८) १ छड़ी (या हथौड़ी) (९) १ पीड़ा (१०) ५ सेर रुई (या हथौड़ी) (११) १ सलाई (१२) १ बोरा (या गोजन) (१३) १ गौदीछा। इन चीजों को प्रदान करने के लिये हर एक डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल के स्कूल को सरकार से ५० रु० का ग्रेन्ट दिया गया है।
डिस्ट्रिक्ट कौन्सिलों के जिन स्कूलों में काम करने लगे हैं उन स्कूलों से एक-एक शिक्षक विद्यामन्दिर-ट्रेनिंग स्कूल में दो महीने की ट्रेनिंग के लिये भेजे गये हैं। आशा है कि शिक्षकों की शिक्षा के बाद बुनियादी तालीम में पुराने स्कूलों में बुनियादी तालीम की प्रवृत्ति जारी रहेगी।

(३) अहमदाबाद के 'गुजरात-विद्यापीठ' में अध्यापन-केन्द्र का स्थापन ।

बंबई-सरकार ने बुनियादी तालीम की वर्धा-योजना के परिणाम देखने के लिये अपने भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी तीन विभागों में (गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक में) तीन अध्यापन-केन्द्र खोलने का निश्चय कर लिया है। इस निश्चय के अनुसार पहला केन्द्र अहमदाबाद में ता० ३-१-३९ को गुजरात-विद्यापीठ में स्थापित किया गया। इसका उद्घाटन उस दिन ८॥ वजे सुबेरे बंबई-व्यवस्थापिका सभा के स्पीकर माननीय गणेश कृष्णदेव मावलंकर साहब ने किया था। उस प्रसंग पर अहमदाबाद के बहुतेरे शिक्षाप्रेमी और प्रतिष्ठित सज्जन हाजिर थे। ईश्वर-स्तुति के बाद गुजरात-विद्यापीठ के महामात्र (रजिस्ट्रार) श्री० मंगनभाई पी. देसाई ने समस्त भारत के अनेक मशहूर शिक्षा-प्रेमियों के आशीर्वाद और शुभ-कामना-सूचक पत्र और तार पढ़ सुनाये, जिनमें एक सन्देश महात्मा गांधी का भी था। इन्हीं इस कार्य के प्रारम्भ की सफलता की कामना दिखलाते हुए कार्य-कर्ताओं को नई योजना के लिये उत्साहित किया था। बाद में महामात्र साहब ने अपनी भाषण पढ़ सुनाया जिसमें गुजरात-विद्यापीठ में केन्द्र खोलने के विचार के विकास का और धामनागांव के प्रयोग का इतिहास बतलाया गया था। उनकी प्रार्थना पर केन्द्र का उद्घाटन करते समय मावलंकर साहब ने सरकारी नौकरों के साथ मिलकर नई योजना का प्रयोग करने के लिये विद्यापीठ को बधाई दी। विद्यापीठ में काम करने वाले कार्यकर्त्यों को बधाई देकर उन्होंने उन शिक्षकों की भी मुबारक-बादी दी जिन्होंने इस नये प्रयोग की जिम्मेदारी को अपने कंधों पर उठाया है। इस अभ्यास-क्रम के लिये सूचित जिले से २८ शिक्षक आगे बढ़े और भिन्न-भिन्न जिलों और संस्थाओं से १२ शिक्षक आये हैं; इस तरह ट्रेनिंग में कोई ४० शिक्षक शामिल हुए हैं। इन्हें विद्यापीठ के कार्यकर्ता और सरकारी संस्थाओं से चुने हुए छात्रवास शिक्षक मिलकर ट्रेनिंग देंगे। आशा है कि इस तरह राष्ट्रीय और सरकारी दोनों पक्षों का सम्मिलित प्रयास नई बुनियादी तालीम के प्रयोग में सफल अवश्य मिलेगी।

बुनियादी तालीम के मूल सिद्धान्त ।

गांधीजी के कार्यक्रम में 'संस्कृति' पर भाषा करते हुए कल अचार्य पोलोन्ती ने कहा कि यह बतलाने की कोशिश की थी कि हमारे राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन में किस तरह का परिवर्तन पैदा होना चाहिए और इस

से अच्छे वातावरण में, किसी चुनी हुई देहाती के द्वारा हो सके। इस तरह से विचार करने पर यह योजना देहाती बाळकों की जागीर के क्षेत्र में सन्ति सचित होगी। वह किसी भी अर्थ में पश्चिम से लेई हुई चीज नहीं है।”

नगर-संघों या शहरों की तुलना में देहाती गांवों को प्राथमिकता दी जा रही है। भारतीय राष्ट्र गांवों में रहता है। राष्ट्र के विकास के लिये निर्धारित राष्ट्रीय शिक्षा नीति का रूप देहाती होना जरूरी है। ध्यान देने लायक बात यह भी है कि हमारी सभ्यता और संस्कृति का संबंध बुनियादी से ही गांवों से है इसलिये हमारी शिक्षा का रूप देहाती ही होना चाहिये। पिछले दिनों में हमारी सभ्यता को सजीव शिक्षण-संस्थाओं के जतन और से जीवित रखने की कोशिशें जरूर की गई हैं। कोशिशों में अश्वमेध, राष्ट्रीय विद्यापीठों और गुरुकुलों का रूप धारण किया। परन्तु इन संस्थाओं ने शिक्षा-पद्धति के साथ अपना संबंध खूब दूर न बनाया यानी ये संस्थाएं जिस तरह की क्रान्ति करना चाहती थीं उसका रूप बुनियादी न था। वह पुराने रूप और नये आदर्श का मेल था। यही सबब है कि असली गढ़ तक पहुंच सकने के कारण उनकी कोशिशें पूरी पूरी सफल न हुई क्योंकि उन्होंने भीतरी मकसद को छोड़कर बाहरी रूप का ध्यान दिया। पद्धति देहाती जिन्दगी का कुदरती विकास न होकर बाहर से लादी हुई चीज थी। उसकी बुनियाद में दस्तकारी या उद्योग-धंधों को केन्द्र ध्यान न दिया गया था।

यहाँ इस बात को समझ लेने की जरूरत है कि बुनियाद में दस्तकारी या उद्योग के वाली तालीम के गांधीजी का मतलब क्या है। इस पर जिन लोगों ने लिखे "आवश्यक है कि ये उद्योग-धंधे... यंत्रवत्-सिखाये जाते हैं; वे वैज्ञानिक ढंगसे... यानि अच्छों को यह समझाया जाय कि... किसलिये की जाती है।" तभी ठीक रहता है।

दरिद्री या उद्योग धंधों के कारखाने शिक्षा देने
के इच्छामन्त्रों को कोई नई बात नहीं है।
एक से शुरू होकर शिक्षा-विस्तार ने दुर्लभ स्थिति
हिस्से में परिवर्तन किया है कि वास्तविक
शिक्षा सिर्फ दस्तावेजों के रूप में ही प्रयोज्य और भिन्न
होती है इस उसी तरह की हद तक आगे बढ़ने और प्रतिगमन
की विचारणा गांधीजी ने विचारणीय ढंग से की है—

ले गये हैं क्योंकि उन्होंने सिर्फ यह ही नहीं देखा कि बच्चों की सारी शिक्षा किसी उद्योग-धंधे के जरिये दी जाय, बल्कि यह भी देखा है कि यह शिक्षा स्वावलंबी भी हो। वर्षा-शिक्षण जो कि किसी भी तरह की उतनी नुकूल-चीनी चीज नहीं है जितनी उस स्वावलंबी कहे जानेवाले पहलू का हुई है। इसलिये यह समझ लेना जरूरी है कि स्वावलंबी शब्द का क्या अर्थ है और वह हमारी शिक्षा-योजना का मुख्य अंग क्यों है।

इस तरह की तालीम के पूरे हिस्से पर गौर किया जाए तो वह स्वावलंबी जरूर हो सकती है और जरूर होना चाहिये; दर असल में उसका स्वावलंबी-पन उसकी वास्तविकता की एक सौदी है। उसके स्वावलंबी-पन के लिए नैतिक मूल्य, उसकी अधिक से अधिक उपयोगिता की अपेक्षा, कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है।

अतः हमें यह खोजना होगा कि गांधीजी के मनुष्य-पन के समूचे तत्त्वज्ञान और अधिष्ठा के साथ इस शिक्षा-योजना का तालक किस तरह है। “स्वावलंबी शिक्षा की योजना अधिष्ठा की मनोभावना से अलग नहीं की जा सकती; जब तक हम यह याद नहीं रखते कि इस नई योजना का उद्देश्य एक ऐसा जमाना पैदा करना है जिसमें जातिद्वेष और भिक्वन्दी का झगडा बिल्कुल न रहने पावे और सभी को समानता या बराबरी बिल्कुल शोक दी जाय तब तक यह योजना सफल बना नहीं सकते। गरज यह है कि अधिष्ठा का विश्वास रखकर इस काम में लगना और गहनतान रखनी चाहिये कि इस योजना को सफल बनाने का दिमाग न का है जो अधिष्ठा की तमाम बातों को अचूक ध्या समझता है।”

प्रातःकाल के मध्य प्रयोग की सफलता या असफलता निम्नलिखित साधनों पर ही निर्भर है और जो इस प्रकार के प्रयोगों को सफल बना सकते हैं वे ही शिक्षा-योजना की सफलता के लिए हैं। इसलिये इस समय की शिक्षा योजना [विश्वी शिक्षा योजना] के अन्तर्गत ऐसे श्रद्धावान् शिक्षकों की आवश्यकता है जो तालीम के आदर्श को परापूर्वक रूप से समझ सकें और उनके लिये काम करने के लिये तैयार हों।

इस पुस्तक के मुख्य विचारों को जोड़कर एक नया पुस्तिका तैयार की जायेगी।

संसार के सभी देशों में इस पुस्तिका का प्रसारित किया जायेगा।

इस पुस्तिका को सभी कुल के लिये उपलब्ध कराने का प्रयत्न किया जायेगा।

देवि-प्रसाद शर्मा, शिक्षा-विभाग, आर्य समाज, दिल्ली।

आशा है कि यह पुस्तिका सभी के लिये उपलब्ध होगी।

जारी

दुरुस्ती:— (१) पृष्ठ ६ के पहिले कॉलम में १३ वीं लाइन में गज के बदले कर चाहिये।

(२) पृष्ठ ६ कॉलम २ लाइन १० में (देखिए नमूना नं. ८ के साथ) अ और ब इतना और बढ़ाये।

(३) पृष्ठ ८ नमूना नं. १ के चौथे खाने में “तार तोलों में” के बदले “वजन तोलों में” चाहिये।

(४) पृष्ठ ८ नमूना नं. ४ के ९ वें खाने में औसत के साथ तोले बढ़ाये।

(५) नमूना नं. ७ में गति शब्द काय और बाये इन दो शब्दों पर चाहिये। कुल का मूल्य दिन भरके काम से है। इसलिये ‘कुल’ के साथ ‘काम’ शब्द जोड़ दीजिये। अतः वे खाने निम्न प्रकार से खींचे जावेंगे।

ता० १।६।३८.		
गति		
दायां	बायां	कुल काम

(६) पृष्ठ १० के ऊपरी विद्या-मन्दिर ट्रेनिंग स्कूल-वर्षा से शुरू होने वाले तख्ते के लिए “नमूना नं. ९” लिख लेना चाहिये।

(७) पृष्ठ १०, नमूना नं. ९ के तीसरे खाने में “औसत गति” के बदले “४० मिनिट की औसत गति लपेटने के साथ” इतना चाहिये।

(८) पृष्ठ १० नमूना नं. ९ के चौथे खाने में “घंटेकी-गति” के बदले “आधे घंटे की गति बिना लपेटे” इतना चाहिये।

(९) नमूना नं. ८ अ के सितम्बर और अगस्त के आलेखों में इतने अंतर की जरूरत नहीं है। वे एक दूसरे से निकल रहे हैं। हाँ, चाहे तो यह खाने के लिये कि वे अलग-अलग माह के हैं, बीच में एक बारीक सफेद भाग छोड़ दिया जा सकता है। महीनों के नाम आलेख के बाईं या दाहिनी ओर लिखे रहें।

(१०) पृष्ठ ११ नमूना नं. ८ व और पृष्ठ ११, नमूना नं. १० में दायें छोर के लिये X.....X इस तरह की खींची रेखा नमूने के ऊपर दी गई है उसके बदले X.....X स. तरह की अखंड-रेखा खींची जाये।

दस-दस तोल रुई तोलने में थोड़ी ज्यादा रुई चली जाती है या कोठार में चूहे वगैरह से टूट नुक़ान होता है या बाजार में से बड़े कांटे पर तोलने पर रुई लेने के बाद अपने यहां छोटे कांटों से तोलने में फर्क पड़ता है; ऐसे कारणों से जो टूट या कम आती है उसको हमने "कोठार-टूट" का नाम दिया है। इसकी जरूरत यह जानने के लिये है कि विद्यार्थियों की टूट और कोठार की टूट कितनी कितनी आई।

(२) पृष्ठ ८ नमूना नं. ३ के नीचे "रुई-घट" का अर्थ समझाया गया है। उसका "रुई-घट" का प्रमाण प्रतिशत १० याने १०% माना है। यह प्रमाण रुई की अच्छी, बुरी, कचरे की; बिना कचरे की वगैरह जातियों पर अवलंबित है। जिस रुई का उपयोग करना है उसमें से थोड़ीसी रुई लेकर और दो चार दफे प्रयोग करके शिक्षक को देखकर इस घाटे का प्रमाण ठहराना होगा। आम तौर से १०% से ज्यादा "रुई-घट" नहीं देनी होगी।

(३) नमूना नं. ९ में कताई के नीचे 'घंटे' 'लटी' ऐसे दो खाने हैं। उसमें घंटे के खाने में घंटे और मिनट दोनों और लटी के खाने में लटी और तार दोनों लिख सकते हैं। उदाहरणार्थ, एक विद्यार्थी ने दो घंटे २० मिनट में २०० तार काते हैं तो वह इस तरह लिखेगा:—

कताई	
घंटे	लटी
२-२०	१-४०

(४) "४० मिनट की औसत गति लपेटने के साथ" और "आधे घंटे की गति बिना लपेटे," इन दोनों खानों को पास रखने में एक उद्देश्य है। औसत गति मतलब, जितने समय हम काम किया है उतने समय में जिस काम हुआ हो उसपर से हिसाब से निकाली हुई गति है। आधे घंटे की गति यानी मौनपूर्वक लगातार आधे घंटे एक कातने से प्रत्यक्ष निकली हुई गति। इस तरह की आधे घंटे की गति के प्रत्यक्ष उपयोग हैं, उसकी ची कभी दूसरे समय पर करेंगे। इस प्रत्यक्ष गति और घण्टे के हिसाब से निकाली हुई औसत गति में कितनी फर्क है वह एकदम ध्यान में आने के लिए दोनों खानों को पास-पास रखे हैं। हम आम तौर से कह सकते हैं कि इन दोनों खानों को हमने जो जितना कम फर्क होगा उसका उपयोग करने के लिये किया है। आधे घंटे की गति

आध घंटा कितने के आधे घंटे का समय उतना सूत काटने में भी लगता है। कातना हमें जितना आधे घंटे में बंद सकते हैं पर यह बात लपेटने के बाद ही तय हो सकेगा। ऐसा नहीं हो सकता कि ५ या १० मिनट में काम हो सकेगा होगा ही। अब इस आध घंटे की गति से लपेटना गति की तुलना करना है। लेकिन जैसा गति दिखाने में किये हुये काम पर से निकाला जाती है। उस काम में लपेटना भी शामिल है इस बात से (तकली पर) ३० मिनट के काते हुये सूत को लपेटने के लिये सामान्य विद्यार्थियों को १० मिनट लगेंगे—ऐसा मतलब कर ४० मिनट की औसत गति निकाली जाती है।

इसके बाद नमूना नं. ४ के नीचे खानों में खुलासा करना बाकी रहता है। लेकिन उसे काफी खिचने के बाद फिर परेगा इसलिये उसको अगले अंक में करेंगे। तख्तों के बारे में खास खुलासा करना जरूरत नहीं सूत-शॉस् से और आलख, हिसाब-कांते रहे हैं परन्तु जो सामान्य आदमों उसे समझ सकेगा वह ही है।

२३/१/३९

बल्लभदास पटेल

बुनियादी तालीम का साहित्य

बुनियादी तालीम के दो प्रकार हैं: एक प्रारंभिक और दूसरा साहित्यिक। ये दोनों एक दूसरे के बाले मिलाने की एक के बिना दूसरा अधूरा है। प्रारंभिक तालीम का पूरा विकास तभी हो पाएगा जब तक कि साहित्यिक प्रयोग की स्पष्ट कीर्ति रुई और प्रयोग के फल निकले। सम्पूर्ण बने।

इस दृष्टि से जब हम नई तालीम को देखते हैं, तो हमें इसका प्रथम अंश, यानी 'विज्ञान' और 'प्रति-प्रति' के रूप में मिलता है। इसके उपयोग-धर्म सुझावी प्रायः सभी ताज्जुब के सामने आते हैं।

जिस विषय का विचार किया जाय कि प्रारंभिक तालीम का पूरा-पूरा आदी तालीम का प्रारंभिक तालीम की प्रगति के बारे में शिक्षा के तालीम के मूल सिद्धांत के बारे में कताई कि इस विषय में सरां ने दुबरी स्तरी की रिपोर्ट के अनुसार कि वास्तविकता का प्रकाशन कि बुनियादी तालीम का प्रारंभिक अंग और भिन्न अंगों के बीच का अंतर कि वह तक कि आधे घंटे की गति का विचार किया जाय कि

होगा। आजूतकने काम करते आये हैं। वे काम करते थे, जिससे उन या उनकी खदकी तनखा

लंणादिका — आशा देवी

संख्या ३

आप प्रयोग की पहिल अवस्था में इस वर्जन पद्धति

[खारिज करने का तरीका] मुताबिक काम करने तो आपकी और बच्चों की शक्तियों का बचाव होगा। यह बात हमें याद रखना है कि इस नये प्रयोग में हमें रास्ता बनाने के लिए न कोई साहित्य है और न किसी का अनुभव है। इसलिये धीरे-धीरे काम करके हमें अपना रास्ता खुद ही ढूँढ़ निकालना होगा। सबसे जरूरी बात यह है कि शिक्षक अपने मन को ताजा रखे। अगर आपके सामने ऐसा कोई विषय आया जिसको आप दस्तकारी के साथ जोड़ नहीं सकते तो आप अधीर होकर हिम्मत न हारें। उस विषय को आप छोड़ दें। और जिन विषयों को बुनियादी तालीम के साथ जोड़ने का रास्ता आपके सामने सीधा हो उन्हें आप ले लें। मुमकिन है कि दूसरे किसी शिक्षक को यह रास्ता सूझ जाय और वह आपको बतादे कि दस्तकारी के साथ उसका मेल कैसे मिला सकते हैं। इस तरह जब आप बहुतसे शिक्षकों का अनुभव इकट्ठा कर लेंगे तो आपको साहित्य में बन

राजीव ने बहुत से प्रश्न गांधीजी के सामने रखे। वह बहुत से तो शिक्षा संबंधी न थे। पर सबसे महत्वपूर्ण उनका सामने रखा गया था, वह था—
“आज गांधीजी प्रश्न—‘बच्चों को जंगल में छोड़ दिया जाये’ और इस नई शिक्षा पद्धति के जो अर्थ—कैसे तैयार किया जाय??”

प्रातः जिन से यह किसी मित्र ने गांधीजी
कफलता कि जिन साधारण का ऐसी कल्पना है कि
इन्होंने अतीत में जिनके उक्त विषयों का तो विचार

The ... a Sche ... जो तकली के जरिये न.
 [क्वी शिवा भोजना] ... हुए उन्हें वे क...

वार्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित है तालीम के अ...

इस पुस्तक के मुख्य विषय को लिये कमर एक
ने के लिये वृद्धि

संस्कृत-विद्यालय, दिल्ली

करने लगे, मैं कुछ नो छोड़

देवि: ... वर्मा ... ओ ... अनु ... बढता ...
... मे ... व ... ओ ... चु ... न

लट् लृट् भाषागिक पाठ जाडा लृट्
रसका भी आप उ

जायगा, और जो आपके पीछे आयेंगे उनका नाम बहुत आसानी से जायगा। आप मुझसे पूछेंगे कि 'सर्वजन' पत्रिका का प्रयोग आप कब तक करते रहें। मेरा जवाब है—जिंदगी के आखिरे तक।' आखिर में आप सोचें कि शुरू में जिन विषयों को आप छोड़ चुके थे उनमेंसे बहुत से विषय तो आपने ले ही लिये हैं। जितना लेने योग्य था वह करीब करीब सभी शामिल हो चुका है और जो बाहर (छूट गया है) रह गया है, तालीम की दृष्टि से उसकी भूमिका बहुत कम है। यह इसी बाधक था। मेरी जिंदगी का तश्रुवा यही है कि यदि इस तरह मैंने बहुतसी बातें शुरू में उठा लीं होतीं तो जो बातें मैं आज तक कर पाता तो न कर पाता।

X
 बुद्धि का भी जहाँ से ही बदलना है।
 जिसके जाया केमा को तारीफ है। अगर
 यी प्रगति के अखियों में कितनी शक्तियों

माल और करों पूछा जाता है। मधी जयंति, काँग्रेस प्रदर्शनी और मे में कलाई रखी जाती है और उनके परिणाम निकालने के लिये भिन्न भिन्न तरीके अलग अलग लाये जाते हैं। परन्तु जहाँ सालों के अनुभव के बाद भी सुलभ और सरसम्मतता का पता नहीं चलता है। उन सब तरीकों का बहुरूपता जितना करके केवल वर्धन-योजन की परीक्षा को सामंते रखकर तकली के बारे में उनका मत है उस ली जाय यह सिखता हूँ।

इससे जिनका खास परिचय नहीं है वे लोग उस विद्यार्थी को अच्छा कातने वाला समझते हैं जो ज्यादा तोड़े सूत कातता है या जो खूब बारीक सूत कातता है। परन्तु वास्तव में जल वजन या केवल सूत की बारीकी याने नंबर परसे ही निर्णय करना गलत है। वजन और नंबर दोनों का ख्याल करना चाहिये। साथ ही सूत की मजबूती याने कस और सूत का अच्छाई जो समानता भी देखी जानी चाहिये। और कातने वाले ने कितना कष्ट लिया याने कितना तौल और कानों वक्त वह कैसा बैठता है याने उसकी बैठ आदि (Posture) कैसी है यह भी देखना चाहिये। क्योंकि शाला जो कलाई में है मजबूती या सूत के परिमाण का ख्याल ही नहीं होना चाहिये। शाला में शिक्षा की दृष्टि को ध्यान में रखा जाना चाहिये। इसलिये एक विद्यार्थी कैसा बैठकर या चूहे जितना डिक ज्यादा सूत निकालता है इसीसे अच्छा माना नहीं जाना जाय। बल्कि ठीक तौर पर बैठकर, निश्चय रूप से कम गोंडन, डूप रोफ, सुथरा और सुंदर ज्यादा होता है वही अच्छा कातने वाला माना जाना चाहिये। सारांश यह कि शिक्षा में सूत की चाई, नंबर, कस, समानता, कचरा और आसुन इन छ बातों की देखनी चाहिये।

सूत की लंबाई और नंबर—कई लोग परीक्षा में सूत की लंबाई के लिये गुण देते हैं और नंबर के लिये अलग। शिक्षा जिये एक विद्यार्थी ३०० नंबर के सूत का दूसरा २५० तार १ नंबर के कातता है। धनियाँ अंकि तो दो सूत की जो—१०० तार के कातता है। दूसरे सूत के लिए ३० गुण—इस तार के सूत की लंबाई (गुण)=३९ गुण और दूसरे के २५०+१००=३५० गुण आये। कई लोग सूत की गुण संख्यायें नंबर या गुनी संख्या मिलाकर निकालते हैं। उपरके उदाहरण का हिसाब इस तरीके से गुण (३५०×१०)=३९० और २५०+१००=३५० गुण। कस=३५० गुण हिसाब करके विद्यार्थी को कस का नंबर मिलेगा। कई लोग तो और नंबर का गुण निकालते हैं।

पर बायें पैर की पिंडली पर कातते वक्त ये सब कार्य इसको विपरीत करने होंगे। इस आसन पर बैठने में दाहिना पैर बायें के रूप में और बायें पर मोड़कर दाहिने पैर के तलवे पर टिकाकर रखना होगा। फिर बायें हाथ की तलहथी से तक्रली पर बट देना होगा। इस वक्त तलहथी पीछे के बजाय आगे की ओर जायगी। पिंडली पर सूत कातने में बट तेजी के साथ चढ़ता है। अतः तार खींचने में कुछ फुरती करनी होगी। अन्यथा कचरा ज्यादा पैदा होगा। इस आसन पर बैठकर बच्चे कुछ दिन तक अभ्यास कर लें तो उन्हें इसीसे मिलता जुलता दूसरा आसन दोनों पैर के दोनों तलवों पर बैठकर कतगने का अभ्यास कराना चाहिए। लेकिन उसकी क्रियाओं पर मैं अगले अंक में प्रकाश डालने की कोशिश करूंगा।

क्रमशः

गुरुदेवसिंह, शिक्षक

ता. २७।६।३९

बुनियादी तालीम के प्रयोग में निरीक्षण का सवाल

बुनियादी तालीम की योजना के बुनियादी उद्देश्यों से हम परिचित हैं। बुनियादी तालीम का जो पाठ्यक्रम है, हम मानते हैं कि उसमें समग्रता है, जीवन के साथ उसका सम्बन्ध है और अगर इसका ठीक ठीक प्रयोग हुआ तो इससे एक ऐसा सुसंस्कृत और समृद्ध व्यक्ति पैदा हो सकता है जो स्वावलम्बी होगा और जिसमें नागरिकता की वृत्ति पूर्ण विकसित होगी। पर साथ साथ इस बात को भी याद रखना जरूरी है कि अभी यह शिक्षा-योजना प्रयोग की अवस्था में है और इस प्रयोग में जो जो अपना हाथ बँटा रहे हैं वे सब एक वैज्ञानिक शोध (research) के काम में लगे हुए हैं, ऐसा मानना चाहिये। इसलिए हमारी पद्धति भी शोध की पद्धति होनी चाहिये।

राष्ट्रीय शिक्षा के इस प्रयोग में हमें प्रत्येक स्कूल को—जहाँ बुनियादी तालीम दाखिल की गई है—प्रयोगशाला के रूप में तथा प्रत्येक कार्यकर्ता (शिक्षक) को प्रयोगकर्ता के रूप में समझना चाहिये। इस प्रयोग की पूरी सफलता के लिये, इस तालीम के प्रयोग के लिये जो इलाका चुना जाय वहाँ एक ऐसे कार्यकर्ता की जरूरत होगी जो इस प्रयोग की प्रगति का निरीक्षण करे। समय-समय पर इस प्रयोग की विगत और परिणाम का हिसाब रखे और परीक्षा के बाद ठीक ठीक नतीजे पहुंचने के लिये आवश्यक सामग्री इकट्ठा करे। इस प्रयोग की पूरी सफलता के

खयाल से यह जरूरी है। इस कार्यकर्ता को हम निरीक्षक कहेंगे और चूंकि इनका काम समन्वय का काम रहेगा इसलिये उन्हें समन्वायक भी कह सकते हैं।

मान लीजिये कि किसी एक खास इलाके में २० स्कूल हैं। यदि बुनियादी तालीम केवल पहले दो वर्षों में दाखिल की गई है तो उसमें करीब ४०० प्रयोगकर्ता होंगे जो एक ही प्रश्नों का हल करने के लिये २० मुस्तलिफ तरीके काममें लायेंगे, अिनके सामने सामग्रियां भी २० प्रकार की होंगी। और वे एक ही नतीजे पर पहुंचने के प्रयत्न में प्रत्येक विषय के समन्वय के लिये करीब २० कड़ियां बूढ़ निकालेंगे। इन पद्धतियों में से कुछ अच्छी होंगी और कुछ मामूली। अच्छी पद्धतियों में से दो या तीन औरों से बढ़ कर होंगी और शायद एक ही ऐसी निकलती जे प्रमाण माना जा सकती है। अब निरीक्षक का काम यह होगा कि वह यह प्रयत्न करे कि कौनसी पद्धति सब प्रवृत्तियों के लिये सबसे अच्छी है और अन्त में यह निर्णय करे कि वह व्यवहारिक है या नहीं।

यह सारा काम अकेले करना मनुष्य की शक्ति से बाहर की बात होगी। इसलिए स्वभावतः उसको मदद के लिये एक योग्य संस्था चाहिए। ऐसी योग्य संस्था एक ट्रेनिंग स्कूल ही हो सकती है। इस ट्रेनिंग स्कूल को एक केंद्रीय प्रयोगशाला के रूप में समझना चाहिये और बुनियादी तालीम के कार्यकर्ता को इसकी सहायक प्रयोगशाला में मानना चाहिए। सामग्री का संग्रह बुनियादी स्कूल में से होगा और इसमें व्यय और पसन्द करने का काम इस केंद्र के जरिये होगा। उदाहरण के तौर पर मान लीजिये कि सारी शिक्षा की व्यवस्था एक बुद्धिमान मनुष्य है। तो ट्रेनिंग केंद्र उसके मस्तिष्क का काम करेगा, विद्यार्थियों की शिक्षा उसके हाथ पैर का काम करेगा और निरीक्षक स्नायुजाल के रूप में सारी प्रवृत्तियों को मास्तिष्क या मन के साथ जोड़ने का काम करेगा।

यदि निरीक्षक अपना इस संयोजन का काम ठीक ठीक करना चाहे तो उसे नियमित रीतिसे स्कूलों में जाकर शिक्षा का जो प्रयोग चल रहा है उसके सम्बन्ध में आंकड़े इकट्ठा करने होंगे। और उन्हें ठीक ठीक केंद्रीय प्रयोगशालाओं में पहुंचा देना होगा। जैसे कि पिछले दौर से लेकर वर्तमान समय तक अगर कितना काम हुआ, खास खास स्कूलों को हल करने के लिये किस पद्धति का प्रयोग किया गया, उसका नतीजा क्या हुआ, बुनियादी दस्तकारी के साथ दूसरे विषयों का सम्बन्ध किस प्रकार से किया गया इत्यादि। इतना ही नहीं उसे शिक्षकों के साथ व्यक्तिगत रूप से बात करके जान लेना होगा कि प्रत्येक विषय के प्राथमिक में क्या रखा बदल करना जरूरी है। उन्हें भिन्न भिन्न प्रयोगों को बढाने में या उन विषयों की बुनियादी दस्तकारी के साथ जोड़ने में

क्या कठिनाइयां पेश आती हैं। निरीक्षक को प्रयोगकर्ताओं में से कमजोर लोगों को हट कर निकालना होगा, और खास तौर पर उन लोगों को जो काम ढालने की वृत्ति रखते हैं।

इस नई योजना के मुताबिक शिक्षा तो और विषयों के साथ साथ मूलोद्योग का समन्वय करने के मौकों पर निर्भर है और समन्वय के मौके भी जहाँ तक हो सकें स्वाभाविक होने चाहिये। इसलिये कुछ लोगों को मौकों मिलने का इंतजाम बताकर बचने की काफी गुंजाइश रहती है। ऐसे शिक्षकों को और खास ध्यान देना चाहिये और उस मामले की बराबर छीनबीन करके निरीक्षक को निश्चित रूप से अपना संभाषण कर लेना चाहिये कि वहानी उच्चा है या नहीं। फिर अपने सफलता का कोई अमुक प्रमाण अभी निश्चित रूप से न होने के कारण कुछ शिक्षकों का काम ढीला चलने की संभावना भी है। इस प्रयोग का एक उद्देश्य यह होना चाहिए कि प्रत्येक विषय में सफलता का एक निश्चित प्रमाण क्या हो। सफलता के प्रमाण में मर्यादा है ऐसा प्रमाण जो "बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा" के नतीजे के पाठ्यक्रम में दिया गया है। इतना अवश्य है कि कृताई जैसी दस्तकारी में एक मूर्त प्रमाण दिया जा सकता है जो कि दूसरे विषयों में और खासकर मातृभाषा, सामाजिक विज्ञान जैसी विषयों में निश्चित रूप से नहीं ठहराया जा सकता। फिर भी शिक्षकों को अपनी पढ़ाई में अमुक प्रमाण की सफलता यानी ही चाहिए इसकी कुछ रूपरेखा माध्यम करना संभव है। इसके वास्तविक भिन्न भिन्न स्कूलों में विभिन्न विषयों में बच्चों की प्रगति का हिसाब रखा होगा और निरीक्षक इसे यह सब विगते इकट्ठा करके केंद्रीय प्रयोगशाला में पहुंचा देना लेंगे। यदि ये विगते इकट्ठी की जायें, उनको छांटा जाय अथवा वर्गीकरण करके उनकी जांच की जाय तो एक वर्ष के अंत में प्रत्येक विषय में योग्यता का एक प्रमाण स्थिर किया जा सकता है।

निरीक्षक को समन्वय का काम किस तरह से करना पड़ेगा यह मैं ऊपर बता चुका हूँ। पर इतना ही नहीं निरीक्षक का काम इससे भी कठिन है। प्रयोग की अवस्था में शिक्षकों को स्कूल की पढ़ाई तथा व्यवस्था दोनों में बहुत कठिनाइयां पेश आती हैं। पढ़ाते समय हर एक विषय बच्चों के सामने किस तरह से उपस्थित किया जाय और मूल उद्योग के साथ उनका मेल किस तरह से मिलोया जाय इस विषय में निरीक्षक को मार्गदर्शन की जरूरत होगी और चूंकि निरीक्षक का ज्ञान और अनुभव शिक्षकों से अधिक होगा

इसलिये उनसे इस मार्गदर्शन का आशा की जायगी। मुश्किल मुद्दों को और कठिनाइयों को हल करने में भी निरीक्षक शिक्षकों के सहायक होंगे। ऐसी अपेक्षा है। अपने काम से उन्हें बहुत सी स्कूलों में एक ही विषय को कई तरह से पढ़ाने के तरीके देखने का मौका मिलेगा। इसलिये सबसे अच्छे तरीके को सबके पास पहुंचा देना भी उनका काम रहेगा। इस तरह, पाठ्यक्रम, ज्ञान और पढ़ाई का तरीका एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना यह भी निरीक्षक का एक मुख्य काम है।

पर यह सब काम ठीक रीति से करने के लिये दो बातों की जरूरत है—एक तो निरीक्षक को अच्छे से अच्छा शिक्षक होना चाहिये और दूसरे दस्तकारी के काम में निपुण होना चाहिये। निरीक्षक खुद को शिक्षक का पदार्थक न समझकर उसका बड़ा भाई समझे। ज्ञान और अनुभव में वह शिक्षक से भले ही प्रवीण हो पर उसके व्यवहार में दक्षता और मैत्री भरी हो तभी उनका काम ठीक तरह से चल सकता है।

खास करके सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में जो अमली-प्रवृत्तियों की सूचना की गई है उनकी व्यवस्था करने में शिक्षक के सामने ग्राहले पहिल बहुत दिक्कत पेश होंगी गांव की सफाई आदि सेवा-कार्य में शायद उसका अनुराग भाग्य हो। ऐसी परिस्थिति में निरीक्षक को स्वयं अपने दृष्टांत से उसको प्रोत्साहित करना चाहिये। इसलिये निरीक्षक को समाजसेवा के काम में भी खुद को तैयार करना चाहिये।

सबसे आखिरी बात यह है कि इस योजना की सफलता के लिये यह निहायत जरूरी है कि इस प्रयोग की भिन्न भिन्न अवस्था का ठीक ठीक विवरण रखा जाय। इसलिये शिक्षकों को समझा देना चाहिये कि जहाँ जहाँ उनकी कमी है उसे अगर वे स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लेंगे तभी वे इस प्रयोग की सच्ची सेवा कर सकेंगे। इसलिये शिक्षक के काम का विवरण सच्चा हो इस बात पर निरीक्षक को खास ध्यान रखना जरूरी होगा।

यह तभी संभव हो सकेगा जब निरीक्षक का शिक्षकों के साथ मित्र सा संबंध हो। तब जैसे बच्चे अपने पूरे विश्वास के साथ अपने मां बाप के सामने अपनी कठिनाइयां पेश करते हैं या हम जैसे अपने मित्रों के सामने अपनी कमजोरी का जिक्र करते हैं इसी तरह खुले दिल से शिक्षक भी निरीक्षकों के सामने अपनी कठिनाइयां पेश करेंगे।

अगर अध्यापन केन्द्रों के शिक्षक भी समय समय पर स्कूलों में जाकर इस प्रयोग की प्रगति की जांच करें और हिसाब रखें तो निरीक्षक के काममें बहुत मदद पहुंचा सकेंगे। एक निरीक्षक की देखरेखमें १५-२० से अधिक स्कूल न हों। और कमसे कम पंद्रह दिनमें एक बार निरीक्षक हर एक स्कूलमें जाय और कुछ समय बितावे। जहां प्रयोग का इलाका छोटा है वहां समय समय पर शिक्षकों के सम्मेलन से काम बहुत आगे बढ़ेगा। बीच बीच में निरीक्षक, कुछ चुने हुए शिक्षक और अध्यापन केन्द्र के अध्यापकों की एक संप्रलित बैठक भी होनी चाहिये।

शिक्षा के इस नये प्रयोग में निरीक्षकों के काम और जिम्मेदारियों का जो चित्र मैंने ऊपर खींचा है उसमें उनके लिए अवकाश की गुंजाइश बहुत कम है। क्योंकि उनके छुट्टी के दिन भी कार्टनाइजों की चर्चा में ही होते हैं। पर जो निरीक्षक सच्चे शिक्षाप्रेमी होंगे वे इससे घबराये नहीं।

निरीक्षण के सवाल पर ये मेरी कुछ सूचनाएँ हैं। इसकी असल जांच तो एक प्रभक्ष अनुभव से ही हो सकती है।

श्री लीलाधर देसाई

(बम्बई प्रेसिडेन्सी के बुनियादी तालीम के खास प्रदाधिकारी)

बुनियादी तालीम की प्रगति।

उर्दू बेसिक ट्रेनिंग सेन्टर-जलगांव-बम्बई प्रेसिडेन्सी

बड़ी खुशी की बात है कि ता. २४ जुलाई को जलगांव में बम्बई प्रेसिडेन्सी के उर्दूभाषा भाषी शिक्षकों के लिये एक स्वतंत्र ट्रेनिंग स्कूल खोला गया है। बम्बई प्रेसिडेन्सी के भिन्न भिन्न प्रांतों से २० शिक्षक इस ट्रेनिंग स्कूलमें दाखिल हुए हैं। जलगांव के चारों ओर काँस का इलाका है इसलिये इस अध्यापन केन्द्रकी बुनियादी दस्तकारी कताई हो चुनी गई है। साथ साथ बागवानी और कृषि सिखाने का भी प्रबन्ध है। डॉ. अब्दुल हमीद काजी एम. ए. पी. एच. डी (वर्लिन), जो बम्बई प्रेसिडेन्सी के बेसिक एज्युकेशन बोर्ड के सदस्य हैं इस अध्यापन केन्द्र के अध्यक्ष नियुक्त किये गये हैं। आशा है कि उनकी सुयोग्य देखरेखमें इस ट्रेनिंग स्कूल का काम अच्छा चलेगा।

बेतिया थाना-जिला चम्पारण (बिहार)

चम्पारण जिले के बेतिया थानेमें एप्रिल महिनेसे जो ३५ स्कूल खोले गये हैं उन के काम में क्या प्रगति हो गयी है-और इस नये प्रयोगमें शिक्षकोंकी क्या क्या व्यवहारिक असुविधाएँ हैं इसका प्रत्यक्ष अनुभव लेने के लिये हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के मन्त्री श्री आर्यनायकम् ने जुलाई महिनेके आखिर के चार पांच दिन इस इलाके में बिताये थे। वर्षाका समय बिद्यालयोंमें घूम घूम कर देखने के लिये ठीक नहीं है। तब भी बारिशके समय विद्यार्थी और शिक्षकोंकी क्या क्या असुविधाएँ रहती हैं, खेती का काम शुरू होनेपर विद्यार्थियोंकी हाजरीपर सका क्या असर पड़ता है और थोड़े ही खर्चमें जो स्कूल की इमारतें तैयार की गई थीं, बारिशमें वे कितने तक टिक सकती हैं इन सबोंका खास अध्ययन करनेके लिये उन्होंने इसी समय को चुना था।

जाकिर हुसैन समिति की रिपोर्टके हितायकों मुताबिक बिहारमें बुनियादी तालीमके पहले प्रयोगके लिये बेतिया थाने में एक सघन (Compact) इलाका चुना गया है। केन्द्र से छः मीलके दायरेके अन्तर में केवल ३५ स्कूल और ४५ शिक्षक काम कर रहे हैं। इनके कामको देखरेखके लिये दो निरीक्षक और एक व्यवस्थापक हैं। इनका खास काम है, इलाके में देहनाल करना, स्कूलों में सामान आदि बांटना और देहातोंमें प्रत्येक घरों द्वारा उनके सहयोग के लिये कोशिश करना। ऐसे छोटे इलाके में काम करनेसे शिक्षकोंको एक-दूसरेके साथ मिलने और एक-दूसरेके अनुभव से लाभ उठानेका मौका मिलता है।

श्री आर्यनायकम् ने तीन चर्र इस दूमकर करीब करीब सब विद्यालयों के काम देखे और एक दिन सब शिक्षकोंके साथ मिलकर उनकी असुविधाओं और सेवाओं पर चर्चा की।

विषय सूची

- १ शिक्षा का मूल सवाल
- २ बुनियादी तालीम के शिक्षकों-
- ३ की तैयारी -उत्तमसिंह गोमर ३
- ४ बच्चोंको तकली कैसे सिखाएं-वलदेवसिंह शिक्षक ४
- ५ बुनियादी तालीम के प्रयोग में
- ६ निरीक्षण का सवाल -श्री लीलाधर देसाई
- ७ बुनियादी तालीम की प्रगति

मूल्य

एक अंक ०-२-०

वार्षिक

डाक व्यय सहित

नई तालीम

[हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का मुखपत्र]

रूपादिका — आशा देवी

भाग १

अक्टूबर १९२९

संख्या १०

समाज का अभ्यास (Social Studies)

विद्यामन्दिर ट्रेनिङ्ग स्कूलमें दिये हुए श्री विनोबाजी के भाषण का अनुलेखन—

मे आजतक के उद्योग के संबंधमें ही बोलता था। लेकिन, आज उद्योग के चारों ओर सारी शिक्षा देने की कल्पना देनेवाला हूँ। यहाँ मैंने कुछ बगों का निरीक्षण किया पर मुझे संतोष नहीं हुआ। इसमें शिक्षकों का अधिक दोष नहीं है। क्योंकि सभी के लिये यह नयी बात है। एक शिक्षकने एक कहानी कही, बादमें तकली का एक गाना गवाया और माना कि “समवाय” (Correlation) कर दिया। मुझे उसमें कृत्रिमता लगी। तकली का प्रयोग या नाम लिये उद्योग के द्वारा शिक्षा नहीं दी जाती। उसमें से नैसर्गिक रीतिसे जब प्रसंग पड़े तब विषय संबंधित करना चाहिये। वर्गमें क्या पढाते हैं उसकी नोंद शिक्षक रखते हैं। लेकिन, उतना ही काफी नहीं है। कौनसे प्रसंगपरसे वह पढाया गया यह भी लिखना चाहिये। क्योंकि कोई भी ज्ञान अप्रासंगिक—बिना प्रसंग या मोका आये—नहीं देना है। इसलिये कोई बात किस प्रसंगसे पढाई गई उसकी नोंद रखना जरूरी है।

अब मैं पाठ्यविषयों में से “सामाजिक अभ्यास” (Social Studies) के बारे में कहना चाहता हूँ। कक्षाओंकी एक अजीब कल्पना है। वे समझते हैं कि तकली और लपेटे के जरिये सब कुछ सिखलाना है। यह कल्पना ठीक नहीं है। उद्योग द्वारा शिक्षा की मानी यह नहीं है कि सुन-सुन-उद्योग से देना है। लेकिन, जिस तरह कुंजी हमें खोलते हैं उसी तरह उद्योग के द्वारा जीवन खोलना है। यही उद्योग द्वारा शिक्षा के संक्षेपमें मानी है। इसलिये जीवनसे संबंधित हर एक विषय हमारी शिक्ष में आ सकता है। उसकी कृत्रिमतासे उद्योग से जोड़ने की जरूरत नहीं है। कब भी पानी भर रहा है, सुबह का समय है और लू के शाग्रमें आ गये हैं। अब उनसे पहला प्रश्न कौनसा करना चाहिये? उनसे पूछना

चाहिये कि वे शौच जाकर आये हैं या नहीं? अब, यह प्रश्न आज ही क्यों? इसका कारण यह है कि देशांतोंमें जब पानी बरसता है तब चारों ओर कीचड़ की वजहसे हम प्राकृतिक प्रयोजन को ढालते हैं। इस तरह ढालते ढालते बीमार पड़ जाते हैं। इसलिये यह बारिश के दिनका प्रसंग लेकर उन्हें हर रोज सुबह को शौच जानेकी जरूरत समझाना चाहिये। इन सब बातोंका संबंध तकलीसे नहीं है; परंतु जीवनसे है। शिक्षा और जीवन—इनमें अंतर नहीं रहना चाहिये।

“सामाजिक अभ्यास” के पहले दो साल के पाठ्यक्रम की ओर ध्यानसे देख तो हमें उसमें तीन बातें मुख्यतः दीख पड़ेगी।

(१) काल का ज्ञान

(२) स्थल का ज्ञान

(३) सम्यता—संस्कार का ज्ञान (civics)

पहली कक्षा के प्रारंभ में ‘प्राचीन मनुष्य के जीवन’ का ज्ञान कराने के लिये कहा गया है। उसका अर्थ है कि काल का ज्ञान कराने के लिये वह भाग रक्खा गया है। फिर दूर देश के लोगों के जीवन की कल्पना देने को कहा है। उसका अर्थ है, स्थल का ज्ञान कराने के लिये वह भाग रक्खा गया है। काल का ज्ञान याने इतिहास का ज्ञान है। स्थल का ज्ञान याने भूगोल का ज्ञान है। इतिहास और भूगोल का काल और स्थल इतने एकरूप हैं कि सभी भाषाओं में कालवाचक और स्थलवाचक अव्यय बहुधा एक ही से हैं। “पीछे” शब्द कालवाचक और स्थलवाचक दोनों है। अंग्रेजी ‘बिफोर’ (Before) की वही हालत है। संस्कृत में ‘आकाश’ और ‘अवकाश’ स्थल और काल का बोध कराने के उपयोग में आते हैं। मामूली नोटक का ही उदाहरण लें तो उसका भी आरंभ काल और स्थल से ही होता है।

पाठ्यक्रम में पहली कक्षा के लिये अति प्राचीन और हिंदुस्थान से अति दूर के देशों के लोगों का ज्ञान कराने को कहा है। यह बड़ा विचित्र बात है ऐसा आप को लगेगा।

पाठ्य-क्रम-समिति (सिलेबस-कमिटी) में कुछ लोगों की राय थी कि वर्तमान काल का ज्ञान और असंपास का अर्थात् नजदीक के स्थलों का ज्ञान बालकों को पहले कराना चाहिए। फिर प्राचीन काल के और दूर देशों के लोगों का। दूसरे लोगों की राय इससे बिल्कुल भिन्न थी। यह बड़ी मजेदार बात है। दो विचार एक दूसरे से बिल्कुल विरुद्ध दीख पड़ते हैं। फिर भी विचारपूर्वक देखा जाय तो ऐसा नहीं है। जैसे वर्तुल के आरंभ और अंतिम बिंदु एक ही स्थान में आकर मिलते हैं वैसे ही ऊपर के दोनों विचार एक ही स्थान पर आकर मिलते हैं। दोनों का उद्देश विद्यार्थियों को तुलना के द्वारा ज्ञान देना है। तुलना के लिये बहुत नजदीक की या बहुत दूर की चीज सुभीते की होती है।

तुलना दो रीति से की जा सकती है। (१) संपन्न वस्तुओं के साथ, (२) अत्यंत भिन्न वस्तुओं के साथ। इसी को साधर्म्य, वैधर्म्य कहते हैं। संतरे की तुलना मोसंबी से की जा सकती है; वैसे ही किसी खट्टे फल से भी की जा सकती है। गांधीजी के अहिंसावाद की तुलना समानता को दृष्टि से समाजसत्तावाद से की जा सकती है। विषमता को दृष्टि से साम्राज्यवाद से की जा सकती है। राम की तुलना रावण से की जा सकती है, कृष्ण से भी की जा सकती है। बालकों को पढ़ाने में इन दोनों रीतियों का याने साधर्म्य और वैधर्म्य तुलना का उपयोग करना चाहिये। पढ़ाते समय प्रसंग आते ही पिछले काल के संबंध में अथवा दूर देश के संबंध में, जहां परिस्थिति मौजूदा परिस्थिति से भिन्न हो बताना चाहिये। सम्य जीवन के संबंध में बतलाने समय पुराने जमाने के असम्य जीवन की अथवा इसी जमाने के किसी दूर देश के पिछड़े हुए लोगों की बातें कहनी चाहिये। उदाहरण के लिये मानिये की वर्ग में घरों के बारे में बात चली है। मैं विद्यार्थियों से पूछूंगा, घरों में खिड़कियां क्यों बनाते हैं? जवाब मिलेगा, प्रकाश आने के लिये। अच्छा, छप्पर में कांच के कवच (खंपरेल) बैठा दें तो फिर खिड़की की जरूरत नहीं है ना? एकाध विद्यार्थी बोल उठेगा कि प्रकाश तो मिलेगा लेकिन हवा नहीं मिलेगी। अच्छा, ऊपर छप्पर में खिड़की बनाई तो। अब जरा सोचने के बाद शायद जवाब मिलेगा की बाहर का देख नहीं सकेंगे। इस तरह खिड़कियों का पूरा उपयोग उन्हें मादूम होगा। खिड़कियां रूड़े तो फिर दरवाजे की जरूरत है क्या? सोचकर वे कहेंगे कि बाहर भीतर जाने आने के लिये दरवाजे चाहिये। उनको मुझे पुराने जमाने की खिड़कियों की बनावट पर ले जाना है, इसलिये पूछूंगा कि हमारे शरीर में ऐसे कोई खिड़की-दरवाजे हैं? आंख, कान वगैरह—जवाब

मिलेगा। शरीर की इन इंद्रियों को दरवाजे की उपमा दी जाती थी यह मैं “नवद्वारे पुरे” (नौ दरवाजे के शहर में) से कहूंगा। फिर कहूंगा कि प्राचीन काल के मनुष्यों ने शरीर की ही धर की बनावट की कल्पना की है ऐसा दीखता है। घर के शरीर के लिये जैसी एक गोल चीज बनाई और उस में आंख की तरह खिड़की बनाई। संस्कृत में खिड़की को “गवाक्ष” याने गाय की अंखि कहते हैं। आदमियों की आंख से भी गाय की आंख ज्यादा मोटी और लंबी सी रहती है इसलिये खिड़की गाय की आंख के समान बनाई होगी। धीरे धीरे उसमें बदल होते होते आज के जैसे खिड़की दरवाजे के घर हम बनाने लगे। लेकिन अभी भी दुनिया में ऐसे लोग हैं जो पुराने जमाने के घरों के समान घर और आंख के समान खिड़की बनाते हैं ऐसा कहकर उनको ‘एस्किमो’ की बातें बतला सकता हूँ।

दूसरा उदाहरण:—अतिशय प्राचीन, अतिशय घनी बस्तीवाला, जहां की जमीन खूब जोती पकती हुई हो—ऐसा हिंदुस्तान सरीखा दूसरा कौनसा देश है? चीन। अच्छा हिंदुस्तान की जमीन दरहजार बरसों से अधिक बरसों से जोती बखरी जाती है। चीन की भी यही हालत है। फिर क्या कारण है कि हिंदुस्तान की जमीन में कस नहीं है और चीन की जमीन में कस कायस है? क्योंकि वे सोनखाद का—जो सबसे अच्छा खाद है—उपयोग करते हैं। हम उसका उपयोग नहीं करते। मेक्सिका के लोग भी हिंदुस्तान से अच्छी खेती करते हैं। हिंदुस्तान में भी आदमी खेती करने में जोमान है और अमेरिका में २५ एकड़ है। वे लोग खेती अच्छी तो करते हैं पर फिजूल खर्च करते हैं। यंत्रों का बहुत अधिक उपयोग करते हैं। कृत्रिम खाद डालते हैं। काट छांट और योग्य व्यवस्था के साथ खेती नहीं करते।

अमेरिका और चीन की खेती के बारे में यह विचार करने नहीं है बल्कि एक प्रसिद्ध अमेरिकन खेती विशेषज्ञ के हैं, जिन्होंने चीन में जाकर वहां की खेती का अध्ययन करने के बाद “फारमर्स ऑफ फॉरटी सेन्चुरीज” (चालीस सदियों के किसान) नामक एक अच्छी किताब लिखी है। मैं सिफारिश करता हूँ कि शिक्षक यह किताब अवश्य पढ़ें। इस तरह दो देशों की खेती की साधर्म्य-वैधर्म्य तुलना दिखला कर कहूंगा कि हमें चीन का अनुकरण करना चाहिये। यह हम नहीं करते। इसमें हमारी अस्थिरता आड़ी आती है। हम सोचते हैं कि सोनखाद का उपयोग करने से हम अष्ट हैं। गाँगे, हमारा धर्म नहीं हो जायगा। यदि हमें खेती सुधाना है, हमारे देश की गरीबी दूर करना है तो हमें यह पुराने रीयासत छोड़ने पड़े। इस तरह उनको चीन में ले जाऊँगा। साथ ही अप्रत्यक्ष रूप से बुराई का भी निर्देश कर दूँगा।

चीन का नाम आया है, इसलिये "सामाजिक अभ्यास" के बारे में एक बात कह देता हूँ। अक्सर लोग पूछते हैं कि पहली कक्षा में चीनके पहले पांच बादशाहों की कहानी कहने को कहा है। वह कैसे कहेंगे? कैसा प्रसंग लायेंगे मेरा उत्तर यह है कि "सामाजिक अभ्यास" का पाठक्रम सिखलाते समय यह बात ध्यान में रहे कि जिन जिन बातों का प्रसंग आ जाय कह दीजिये। प्रसंग न आवे छोड़ दीजिये। चीन के बादशाहों की कहानी नहीं कह सकते, छोड़ दीजिये। "चीन के बादशाहों की कहानी" रखने का उद्देश चीन से बालक परिचित हो इतना ही है। वह दूसरे तरीके से हो जाय तो भी बस है। पाठ्य-क्रम के पीछे जो दृष्टि है वह महत्वकी है, न कि वहां लिखी हुई कहानियाँ।

छुट्टी जैसी बात पर से भी बच्चा को कुछ सिखला सकते हैं। हिंदुस्थान में अधिक वर्षा हो उस दिन छुट्टी मिलनी चाहिये। विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों ने भी बरसात में खेलना चाहिए। बरसात यानि मध्याह्न का कृपा ही उस स्वरूप में हमारे ऊपर बरसती है। मनुस्मृति में कहा है कि अतिवृष्टि के दिन छुट्टी हो। उभी प्रकार अभाच्छादित दिन हो तब भी छुट्टी हो। अभाच्छादित दिन को संस्कृत में "दुर्दिन" कहते हैं। क्योंकि उस दिन सूर्य की धूप न होने से पचन क्रिया पर परिणाम होता है, मन पर भी उसका असर होता है। ऐसी हालत में तहाँ बाहर जाकर कुछ खेल-कूद करेंगे, काम करेंगे तो भूल लगेगी, मानसिक उत्साह पैदा होगा। अब उनका इंग्लैंड में क्या छुट्टी आती है वह कहना चाहिये। जिस दिन आकाश में सूर्यदर्शन होता है उस दिन वहां खास छुट्टी दी जाती है। सब लोग मजे से खेलते हैं। ऐसा फर्क क्यों होता है, अगर बातों से मैं उन्हीं छोटे बच्चों की दूसरे देशों में ले जा सकता हूँ।

लेकिन एक बात ध्यान में रखना चाहिए कि किसी भी विषय का ज्ञान देते समय दूसरे विषय का प्रासंगिक ज्ञान थोड़ासा देना चाहिये और फिर मूल विषय पर आ जाना चाहिए। हिंदुस्थान देश के संबंध में बतलाते समय राष्ट्र-प्रेम जागृत करने के लिये मैं उस फ्रेंच कवियों को कहूंगा जिसमें यह भाव है कि फ्रांस सब देशों से अच्छा है। फिर मैं हमारे यहाँ का गीत बताना दूंगा। "सारे जहाँ से अच्छे हिंदोस मैं हमार"। तुलना करने के लिये मैंने फ्रांस का उदाहरण ले लिया। फिर अपने मूल विषय हिंदुस्थान के वर्णन पर आगया। इस प्रकार बालकों को "सामाजिक अभ्यास" का ज्ञान देते समय दूर देश और काल के उदाहरण द्वारा तुलना के द्वारा ज्ञान देना चाहिये।

अब मैं मूल सामाजिक अभ्यास की मुख्य तीन बातों में से काल और स्थल का ज्ञान देने इतिहास और भूगोल जिस तरह सिखाना चाहिये, यह कहा। अब मैं दूसरी

बात संस्कार सभ्यता या नागरिक जीवन (सिविलिज्ज) लेता हूँ। नागरिक जीवन या सभ्यता का ज्ञान कराने के लिये पहले दो साल के पाठ्य-क्रम में तीन बातें ली हैं। पाठ्य-क्रम के पहले साल में:—

१. बालक का शाला का जीवन
२. बालक का घर का जीवन और दूसरे साल में
३. बालक का देहात का जीवन।

शालेय जीवन में नीचे की बातें आती हैं:—

(१) रूपदर्शन:—बालक के शाला में आते ही सबसे पहले उसका रूप-दर्शन होता है। रूपदर्शन का मानी है देह स्वच्छ है या नहीं? कपड़े साफ सुथरे हैं या नहीं? कपड़े ठीक पहने हैं या नहीं? वगैरह। यदि उसका नाक बहता है तो शिक्षक को उचित है कि वह पहले उसका नाक साफ करे। नाक क्यों बहता है इसके बारे में कुछ ज्ञान दे। लडका फिर वैसा ही नाक साफ किये बिना आता है तो फिर उसका नाक साफ करे। जितनी बार वह बिना नाक साफ किये आता है उतनी बार उसका नाक साफ करे। एक दिन ऐसा अवश्य लायेगा जब वह लडका साफ सुथरा होकर आवेगा।

यदि लडके की शरीर या कपड़े अस्वच्छ हों तो तू कैसा घिनौना है! अस्वच्छ है! इस तरह उसका तिरस्कार न किया जाय। तुलसीदासजी जिस आदर भाव से "जागिये रघुनाथ कुंवर" कह कर रख की प्रार्थना करते हैं उसी आदर भाव से शिक्षक को बच्चों के साथ व्यवहार करना चाहिये। लडके को अस्वच्छ कहना ठीक नहीं है। वह, अस्वच्छ नहीं है, उसका शरीर अस्वच्छ है। वह, उसकी आत्मा तो परमात्मा का अंग है। यह शरीर तो मैला होता ही है। पर इसे साफ करने से आत्मा पवित्र होगा। एकनाथ महाराजने मनुष्य को "शंकर का करेला" कहा है। आकार इसका कड़ुआ है; लेकिन प्रकार मीठा है। देह करेले के समान कड़ुआ और आत्मा शंकर के समान मीठा है। इसलिये देह के दोषों के कारण विद्यार्थी की आत्मा का तिरस्कार नहीं करना चाहिये।

(२) कक्षा में विद्यार्थी का आचरण:—अपने साथ के विद्यार्थियों से वह कैसा बर्ताव करता है; अपनी जगह पर बैठा है या नहीं? दूसरे का सामान बिना पूछे तो नहीं लेता वगैरह बातें इसमें आयेंगी।

(३) उद्योग के समय विद्यार्थी का बर्ताव:—

उद्योग के समय बारी बारी से चीजें लेना, रखना, चीजों का ठीक तौर से उपयोग करना, मन लगाकर काम करना वगैरह बातें इसमें आती हैं।

(४) खेल:— आचरण केवल वर्ग में ही नहीं दिखता और बनता। वह खेल में भी दिखाई देता है और बनता है। सच पूछा जाय तो आदमी की वृत्ति का असली पता खेल में ही लगता है। क्योंकि खेलते समय उसकी नैसर्गिक वृत्ति दिखाई देती है। खेल का मनुष्य के मन पर होनेवाला असर देखना हो तो महाभारत उसका अच्छा उदाहरण है। बच्चों का और बूढ़ों का खेल याने महाभारत। बचपन में जिस स्पर्धा और द्वेष की जड़ जमी; वह आगे चलकर बचपन में प्रनेप गई और बूढ़ों तक फैल गई। इसलिये शिक्षा में खेल को महत्त्व का स्थान है। खेल में जो महत्त्व की बात सिखाना है यह यह है कि विजय की अपेक्षा सत्य अधिक महत्त्वका है यह भावना पैदा हो, दृढ़ हो। खेलते समय न केवल शरीर को आकार मिलता है बल्कि मन को भी आकार मिलता है। खेल एक सुझावना साधन है जिसके द्वारा नीति का विकास भली भाँति किया जा सकता है। मैं तो ऐसा मानता हूँ कि जो शिक्षक बच्चों के साथ खेलने में दाखिल नहीं होता है वह

शिक्षक किसी काम का नहीं है।

(५) गुरु-कार्य:— जिसको पाठ्य-क्रम में शाला की जिम्मेदारियाँ दहा गयी हैं उनको मैं “गुरु-कार्य” कहता हूँ। शाला के कार्य स्वाभाविक और निजी हैं ऐसी भावना विद्यार्थियों में जागृत करनी चाहिये। शिक्षक भी विद्यार्थियों के साथ उन कामों में भाग लें। ऐसा करने से विद्यार्थियों में यह भावना जागृत करना आसान होगा।

बालक का जीवन:— घर के कामकाजों को मैं “गृह-कार्य” कहता हूँ। गृह-कार्य भी बच्चे खुशी से करें यह बात उन्हें सिखाना चाहिये। घर एक अच्छी शाला है जहाँ उन्हें अच्छी अच्छी आदतें सिखाई जा सकती हैं।

ऊपर की बातों के स्पष्टीकरण के लिये पाठ्य-क्रम में कुछ बातें कही हैं इसलिये मैंने उन बातों का विस्तार नहीं किया है। अब ‘बालक का देहांत का जीवन’ यह रह गया है। लेकिन समय काफी हुआ है और उसकी भी प्रत्यक्ष जरूरत भी नहीं है इसलिये यहीं खतम करता हूँ।

शाला का नाम

गांव

कक्षा—पहली

सप्ताह—

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
कताई के धारंसे मही-नों की संख्या नाम और सन	छात्र संख्या	हर मही-ने में कितने दिन काम किया	हर रोज का औसत समय	पूरी कक्षा का काम			पूरी कक्षा के सब काम की सजदूरी	सजदूरी में लागू			निखालस सजदूरी और
				सूत:—			रु. आ. पै	सूत के दोपों का कारण	पूरी और रु. की घटके कारण	तांत, कातर आदि सामान के कारण	
				घंटे-मिनट	नंबर	शे. छ.					
१ फरवरी-१९३९	२०	२०	२-०	१०	१-८	४०	१-२-०	०-२-३	०-४-०	०-०-०	०-११-५
१ अक्टूबर-१९३९	२०	२४	३-०	१०	१-१२	५०	१-१३-६	०-०-७	०-४-०	०-०-०	०-१५-६
				धुन (युद्ध-गीत)							
				शे. छ.	पद						
				१०-४	०-६-५		२-११-६				
				कुल			५-२५-०				

१ अक्टूबर, १९३६]

नई तालीम

एकसाथ मिलकर अपने अमली सर्वालों पर चर्चा करने की एक घण्टा बैठक है। इसलिये बुनियादी तालीम की संस्थाओं में जो काम कर रहे हैं वे ही इस सम्मेलन के प्रतिनिधि रहेंगे और चर्चा में भाग ले सकेंगे। इस सम्मेलन के अगली उद्देश्यों ध्यान की मैं रखकर हमें केवल उन्हीं चार पांथ मोटे सवालों पर चर्चा करना होगी जो हम सबके सामने उपस्थित हैं। इन्हींका हल ढूँढ़ कर हमें एक खास निश्चयपर पहुँचना है। यही इस सम्मेलन का कार्यक्रम होगा।

(१) शिक्षकों की तैयारी

शिक्षकों की तैयारी का सवाल नई तालीम का एक बुनियादी सवाल है। क्योंकि इस योजना की सफलता या निष्फलता बहुत हदतक शिक्षकों पर ही निर्भर है। इस सवाल पर चर्चा के लिये आज हमारे पास काफी मसाला भी मौजूद है। आज हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न प्रांतों में १३ ट्रेनिंग स्कूल और अकेले एक प्रांत में ७ शिक्षण केन्द्र (Refresher Training Centre) काम कर रहे हैं। बहुतेरे केन्द्रों से एक एक जूथा तैयार हो चुका है और दूसरे की तैयारियाँ हो रही हैं। इसलिये शिक्षकों की तैयारी के लिये मुख्य सवाल क्या है और इन सवालों का सबसे अच्छा समाधान कैसे हो सकता है यह सम्मेलन का एक मुख्य कार्यक्रम होगा।

(२) बुनियादी तालीम के पाठ्यक्रम का प्रयोग

मौजूदा पाठ्यक्रम के मुताबिक कई संस्थाओं में बच्चों की शिक्षा देते हुए एक वर्ष हो चुका है। इसलिए यह पाठ्यक्रम बच्चों की शिक्षा के लिए कहांतक अनुकूल है और उसमें परिवर्तन और संशोधन की कहांतक आवश्यकता है— इसपर चर्चा की सबसे पहिले आवश्यकता रहेगी। साथही इस बात पर भी विचार किया जायगा कि बुनियादी दस्तकारी के रूप से और कौन कौन से उद्योगों की लेकर प्रयोग किया जा सकता है।

(३) Corelation:—

और एक महत्व का सवाल जिसपर सबसे अधिक मतभेद और चर्चा चला करी है वह है शिक्षाका वह नया तरीका जिसे अंग्रेजी में Corelation कहा जाता है और जिसके लिए आज भी हमारे पास कोई सरल हिन्दुस्तान शब्द नहीं है। किसी दल पर बच्चों की बुद्धि और शक्ति का विकास एक बुनियादी दस्तकारी के जरिये किस तरे पर किया जा सकता

है इस पर सबसे अधिक संशय आज भी खुद शिक्षकों और कार्यकर्ताओं के दिलों में मौजूद है। इस संशय को और इस दुविधा को दूर करने का प्रयत्न करना भी इस सम्मेलन का उद्देश रहेगा।

(४) इसके अलावा इस नई तालीम के लिये जिस साहित्य और परिभाषा की जरूरत होगी उसका विचार भी इस सम्मेलन में होगा।

ये तो बुनियादी तालीम से संबंध रखनेवाले कुछ मूल सवाल हैं। साथही इस योजना के प्रयोग में जो आर्थिक और संगठन संबंधी (Administrative Problems) सवाल भी उपस्थित होते हैं, उनपर भी चर्चा करने का जरूरत होगी। क्योंकि इन सवालों के महत्व को भी नहीं भुलाया जा सकता।

सम्मेलन के साथ साथ एक प्रदर्शनी भी रहेगी। आज तक के हमारे अनुभवों का यह एक प्रत्यक्ष प्रतीक रहेगी। इसके जरिये विविध संस्थाओं में होनेवाले कार्यों का एक स्पष्ट और पूरा परिचय देने की कोशिश की जायगी।

हरिजन के वर्धा सम्मेलन के बारे में लिखते हुए महात्माजी ने कहा है— 'एक कदम आगे' और हम चाहते हैं और विश्वास करते हैं कि पूना सम्मेलन से हमारा 'दूसरा कदम' आगे बढ़ेगा। पर हमारा यह उद्देश्य बुनियादी तालीम के सारे कार्यकर्ताओं और संस्थाओं के सहयोग से ही संभव हो सकेगा।

वर्धा शिक्षण

वर्धा शिक्षण—तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ की मराठी मासिक पत्रिका। वार्षिक मूल्य रु. १-८-०।

बुनियादी तालीम जनता की भाषा में ही चलानी चाहिये। तब इस तालीम की चर्चा और उसका विवेचन भी हम परदेशी भाषा में कर सकेंगे जो कार्य 'नई तालीम' हिन्दी उर्दू में सारे हिन्दुस्तान के लिये कर रहा है। वही कार्य महाराष्ट्र के लिये कानि के उद्देश से आचार्य श्री गणवत ने यह पत्रिका शुरू की है। पहले एक को देखते विश्वास होता है कि वर्धा शिक्षण के मासिक एवं व्यवहारिक लेख पहलुओं पर यह पत्रिका अच्छा प्रकाश

डालेगी। पहले अंक में लेखों की विविधता सुतोपजनक है।

आर्य संस्कृति में शिक्षाका आरम्भ जिस वैदिक गायत्री मंत्र से होता था उसी को लेकर संपन्न महाशयने अपना कार्यारम्भ किया है। प्रत्यक्ष किया किये बिना ज्ञान और जीवननिष्ठा दृढ़ नहीं हो सकती है यह उपनिषत् कालीन ऋषियों का सिद्धान्त वर्तमान कालके ऋषिने हमें फिर से किस तरह दिया है उसका विवेचन इस पत्रिका के द्वारा हमें अवश्य मिलता रहेगा।

गांधीजी ने कहा है कि इस बुनियादी शिक्षा की बुनियाद में अहिंसा भरी हुई है। आचार्य भागवत हमें कहना चाहते हैं कि जिसकी बुनियादी में अद्वैत है। अगर अद्वैत से उनका मतलब अहिंसा ही है तब तो कुछ नयी बात नहीं है। अगर अद्वैत से वे यह कहना चाहते हैं कि यह पारा विश्व एक रूप है, जीवन भी एक रूप है, इनके विभाग करना और किसी एक विभाग का ही विकास करने रहना जीवन द्रोह है तो भागवतजी का कहना त्रिलकुल सही है। हम जानते हैं कि दार्शनिक दैत, अद्वैत और विशिष्टाद्वैत के झगड़े में वे पड़ना नहीं चाहते हैं।

‘साहित्य-दर्शिका’ विभाग में वर्षा शिक्षण योजना के लिये उपकारक साहित्य की जो मेहरिस्त दी है वह जिज्ञासुओं के लिये बहुत काम की है। ‘संगीत समचार’ में महाराष्ट्र के प्रयोगों का बयान है।

महात्मा गांधीजी का लेख कहां से ले लिया गया है, यह बताया होता तो अच्छा होता। पांच करघे के बारे में इस अंक में जो जानकारी दी है वह कई लोगों के लिये नई ही होगी।

Co-relation के लिए देशी शब्द कौनसा इस्तेमाल किया जाय यह भी अत्र सोचना चाहिये। श्री विनोबाजी ने ‘समवाय’ शब्द पसंद किया है, मैंने पसंद किया है ‘अनुबन्ध’। इन दोनों में से कौन सा शब्द चलेगा उसका भविष्य काल ही निर्णय करेगा।

स मासिक पत्रिका में अच्छा प्रारंभ किया है। आशा है कि वर्षा शिक्षण के लिये इस पत्रिका की सेवा बड़ी महत्वकी प्रतीति होगी।

क. का. कालेलकर

एक नई पुस्तक

—The Latest Fad (Basic Education) लेखक आचार्य कृपलानी। पुस्तक अंग्रेजी में है। इसकी मूल्य का पूरा महात्मा गांधी ने लिखी है। मूल्य १) रुपया है। पुस्तक अक्टूबर के प्रारंभ में ही प्रकाशित होगी।

अम संतोषन

—पिछले सितंबर के अंक में ‘बुनियादी तालीम के प्रयोग में निरीक्षण का सवाल’ नामक लेख के लेखक (जो बंबई प्रेसीडेंसी की बुनियादी तालीम के खास पदाधिकारी हैं) का नाम भूल से श्री लालधर देसाई छप गया है। उनका नाम श्री लालमोई देसाई है। कृपया पृष्ठक उसे सुधार कर पढ़ें।

आवश्यक सूचना

—बुनियादी तालीम के सम्मेलन के कारण अगले महीने का अंक हमेशा से कुछ पहले निकलेगा। इसलिये ग्राहकों से हमारी नम्र प्रार्थना है कि वे अपनी पता आदि बदलने की सूचना ता. २०-१० के पहले ही हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के मुख्य केन्द्र में भेज दें, ताकि पत्र भेजने और पाने में कोई असुविधा या गड़बड़ न हो।

विषय सूची

	पृष्ठ
२ समाज का अभ्यास	श्री. विनोबाजी भावे १
२ सूत काम का मासिक लेखा	श्री. व. नमभाई ५
३ वर्षा योजना का हार्द अनुबंध	श्री. क. का. कालेलकर ७
४ बुनियादी तालीम का सम्मेलन	संपादिका ८

मूल्य

एक अंक	०-२-०	डाक व्यय सहित
वार्षिक	१-४-०	

१ अक्टूबर, १९३९]

नई तालीम

सूत-काम का मासिक लेखा

शालाओं में कताई के काम के लिये कौन कौनसी बाहियाँ (रजिस्टर) रखना चाहिये, उसमें काम किस तरह लिखा जाय वगैरा बातें "नई तालीम" के जनवरी १९३९ के अंक में दी गई हैं।

इस अंक में पूरी कक्षा की गति कैसी हो रही है यह जानने के लिये हर महीने के अंत में जो तख्ता तैयार करना चाहिये वह नीचे दिया गया है और साथ ही उसकी खाना पूरी किस तरह की जाय वह भी समझाया गया है। हर एक शाला में हर एक कक्षा के काम का मासिक लेखा इस तख्ते के अनुसार रखा जाय तो यह शाला के लिये और दर्शकों के लिये भी बड़ा उपयोगी होगा।

तख्ते की खाना पूरी के लिये हिदायतें

खाना १:—महिना की संख्या नाम और सन

कक्षा में कताई का आरंभ किया गया हो उस महीने की संख्या १ समझी जाय और महीने के बीच में कताई शुरू की गई हो तो उसकी तारीख वहाँ डाल दी जाय।

खाना ५:—पूरी कक्षा का काम

कताई:—आखिरी से वर्ग के सभी बच्चों निश्चित नंबर का या उसके आसपास के नंबर का सूत निकालें ऐसी कोशिश शिक्षक को करना चाहिये। सूत करीब करीब एक समान नंबर का हो तो पूरी कक्षा के सूत में से साधारण मध्यम प्रकार के सूत की एक लच्छी लेकर उसका नंबर निकाला जाय और वही नंबर पूरी कक्षा के सूत का माना जाय। यदि बच्चों के सूत के नंबरों में काफी फर्क हो तो पूरे सूत की मोटाई के अनुसार आखों से देखकर दो या तीन विभाग कर के, हर एक विभाग में से मध्यम प्रकार के सूत की लच्छी लेकर, नंबर निकाला जाय। नंबर निकालने के लिए लच्छी का ही कस निकाला जाय। इस तरह करने से पूरी कक्षा का काम इस तरह लिखना होगा:—

नंबर	शे. छ.	कस
१०—	५-४-	४०
	अथवा	
८—	२-४-	४५

जिला प्रांत

साधन—कली

	१०	११	१२	१३	१४		
हर एक विद्यार्थी की महीने की औसत निखर मजदूरी	आध घंटे की नियमित कताई गति			की सही गति (अपेक्षित गति के परिमाण से)	वट	सूत से वटका अनुपात	विशेष
	औसत	सबसे अधिक	सबसे कम		रुई शे. छ.	पूनी शे. छ.	यदि वट विशेष हो तो उसके कारण
०-०-५	२०	४०	११	४०%	०-०	०-४	१६३% शुरू का महिना ऐसेसे ज्यादा दूदा रुई की जात:—बेरम
०-६-०	६०	१००	३५	८३%	०	४	५% रुई की जात:—बेरम

चल्लभ

५-१-१९

बल्लभ

५-९-३९

१०— १-१२— ४०

१२— १-४— ३८

धुनाई:—(१) बुनियादी शिक्षा में पहली छमाही में धुनाई नहीं है। इसलिये तबतक धुनाई का काम लिखने की जरूरत न पड़ेगी। लेकिन जब धुनाई शुरू होगी तब, कताई का काम लिखने के बाद एक लकीर खींचकर 'धुनाई' शब्द लिखकर कितना धुना गया यह लिखा जाय।

(२) धुनाई के साधन का नाम याने जिस पीजानपर धुना गया हो उसका नाम लिखना चाहिये।

(३) धुनाई की मजदूरी, जिस नंबर का सूत उस रूनी में से काता जायगा उस नंबर की धुनाई के दर (जो मजदूरी निकालने के लिये दिये हैं) के अनुसार निकाली जाय।

खाना ६—पूरी कक्षा के रूब काम की मजदूरी:

यह मजदूरी सूत पूरा अच्छा है ऐसा मानकर निकालनी है। यानी हिसाबसे उसकी जो मजदूरी होगी वह निकालना है। मजदूरी निकालने में नीचे की बातों को ख्याल में रखना चाहिये:—

(१) मजदूरी नीचे के दरों के अनुसार निकाली जाय:—
नंबर पिंजाई कताई पिंजाईसह कताई

(८० तोले पूनीके लिये) (८० तोले सूतके लिये)

६	० ४ ०	० ४ ०	४ ८ ०
७	० ४ ०	० ६ ०	० १० ०
८	"	० ८ ०	० १२ ०
९	"	० १० ०	० १४ ०
१०	० ६ ०	० १२ ०	१ २ ०
११	"	० १४ ०	१ ४ ०
१२	"	० १ ०	१ ६ ०
१४	"	१ ४ ०	१ १० ०
१६	"	१ ६ ०	१ १२ ०
१८	० ८ ०	१ ८ ०	२ ० ०
२०	"	१ १२ ०	२ ४ ०
२२	"	२ ० ०	२ ८ ०
२४	"	२ ६ ०	२ १४ ०
२६	"	२ १२ ०	३ ४ ०
२८	"	३ २ ०	३ १० ०

(२) जहां हरेक नंबर के दर भलग नहीं हैं वहां सम नंबर में उसके आगे का विषम नंबर भी समझा जाय। जैसे १२ नंबर के दर १३ नंबर को, और १८ नंबर के दर १९ नंबर को लागू समझें जायें।

(३) ६ नंबर के नीचे के सूत का मजदूरी न गिनी जाय।

खाना ७—मजदूरी में कपात:

सूत के दोषों के कारण:—सूत के दोष से यहां मुख्यतः कस अभिप्रेत है। कस के लिये नीचे के अनुपात में कपात की जाय:—

६० या ६० से ऊपर जिस सूतका कस हो उसकी मजदूरी में कोई कपात न की जाय।

५० से ५९ तक के कस के लिये १ रुपया मजदूरी के पीछे १ आधा याने $\frac{1}{2}$ कपात की जाय।

४० से ४९ तक के कस के लिये १ रुपया मजदूरी के पीछे २ आने याने $\frac{2}{3}$ कपात की जाय।

३० से ३९ तक के कस के लिये १ रुपया मजदूरी के पीछे ४ आने याने $\frac{4}{5}$ कपात की जाय।

२० कस के नीचे के सूत का मजदूरी न दी जाय।

पूनी और रई की घटती के कारण:

(१) रई से पूनियां बनाने में घटती और पूनीसे सूत बनानेमें घटती अलग अलग निकाली जाय। (इस घटती का वजन हमें १३ वें खाने में लिखना है) पूनी और रई की घटती की कीमत अलग अलग लिखी जाय और नीचे जोड़ दी जाय।

(२) रई और पूनी जिस भाव से हमें पड़ी हो उस भाव से घटती की कीमत निकाली जाय।

तांत काकर आदि सामान के कारण:

जितने सूत की हमने मजदूरी निकाली है उतने सूत के लिये रई धुनने में जितनी कीमत की तांत, काकरपड़ियां खचे गई हों, उतनी ही कीमत लिखना चाहिये। पहिले का आरंभ में तांत के १० बंडल और काकर की १० पड़ियां धुनकियोंपर लगाई गई हों और महीने के बाद हरेक धुनकीपर आध आध बंडल तांत और काकर ठीक हालत में हो तो ५ काकरपड़ियों की ही कीमत मजदूरी-कपातमें "तांत-काकर आदि सामान के कारण" के नीचे लिखनी चाहिये।

खाना १०—आध घंटेकी नियमित कताई गति:

गति केवल कातने की होगी। लपेटना इसमें शामिल न होगा।

औसत:—पूरी कक्षा की हररोज की औसत लेकर उसपरसे महीने की औसत निकालना चाहिये। (हररोज की औसत निकालने में, जितने विद्यार्थियों ने गति में भाग लिया हो उसकी संख्या ली जाय।)

सर्वाधिक और सारि कम: कक्षा में जिस विद्यार्थीकी सबसे अधिक और जिस विद्यार्थीकी सबसे कम गति आई हो वह लिख जाय।

गान ११ की सारी गति (अपेक्षित गति और परिमाण में)

अपेक्षित गति का यहाँ अर्थ है-अभ्यासक्रम में हरेक सत्र के अंत में दी हुई तकली की अपेक्षित गति। उस गति में लपेटनी भी शामिल है। इसलिये वहाँ दी हुई गति को, केवल कताई की गति से तुलना करने के लिये कुछ बढ़ाना होगा। वह गति नीचे अनुसार लीनी जाय।

वर्ष-सत्र १०-आध घंटा गति।

(केवल कताई)

१-१ ५० तार

१-२ ६० "

२-१ ८० "

२-२ ८० "

जैसे की गति अभ्यासक्रम में दी है वही मानी जाय।

खाना १३-सूत से घटती का अनुपात:-

तरह से खाने में हुई अपूर्णता की घटती का वजन दिया है।

जोड़कर, सूत के घटाने के परिमाण में उसका फी सदी का अनुपात यहाँ लिखा जाय।

खाना १४-विशेष:-

इस खाने में जो कुछ विशेष बातें हों, लिख सकते हैं। किसी शाला में बच्चों को तकली सिखाने की शुरुआत दहिने हाथ के बजाय बाएँ हाथ से की गई हो तो उसका क्या अनुभव आया वह लिख सकते हैं। या किसी शाला में बहुत ही छोटी धनुकली पर बच्चों को पुनर्वाते का प्रयोग किया गया हो तो उसकी जानकारी दे सकते हैं। किसी भी प्रकार की विशेष जानकारी दे सकते हैं।

नियम (१) बाकी के खाने किस तरह भरे जाय यह भरे हुए खानों पर से ही देखा जायेगा।

(२) ओटाई या अन्य क्रियाओं का काम लिखने की जरूरत पड़े तो विशेष के खाने में (खाना नं. १४), या पुनर्वाते के नीचे ओटाई (खाना नं. ५) पूरी क्रिया का काम लिख सकते हैं।

बल्लभभाई

५-९-३९

वर्धा योजना का हार्द-अनुबन्ध

[काका कालेलकर]

-१-

नया वर्धा योजना का हार्द जिस बात में है कि उद्योग की पढ़ाई स्वावलंबी बनायी जाय?—नहीं। अगर उद्योग की सच्ची शिक्षा की अपेक्षा अधिक दे, तो उद्योग शाला विद्यार्थियों के मन में दुःख भाल की बाजार में अच्छी कीमत, मानी जाय।

वर्धा योजना में यह खयाल है ही नहीं कि शाला चलाने का सारा बोझ विद्यार्थियों के सिर पर पड़े। शाला की इमारत, उद्योगालय, पुस्तकालय, प्रयोगालय आदि का खर्च विद्यार्थियों की मिहनत से नहीं निकलेगा। वह खर्च या तो सरकार करे, समाज करे, अथवा कोई दानी व्यक्ति। वर्धा योजना की संस्थाओं के निरीक्षण-परीक्षण का बोझ भी विद्यार्थियों पर नहीं पड़ना चाहिये। विद्यार्थियों से अतिनीही आशा की जाती है कि वे अपने अध्ययनकाल में रोज की तीनचार घण्टों की पढ़ाई के साथ कुछ न कुछ उद्योग कर के महीने भर में आठ-बारह आने अथवा एक रुपया कम कर मुद्राविषण के रूप में दें और यह सिद्ध करें कि उनका उद्योग केवल खेल नहीं है, किन्तु बाजार में उसकी कुछ न कुछ कीमत है। उनको यह संतोष भी होगा कि वे अपनी पढ़ाई केवल मुफ्त में नहीं पाते किन्तु उसके बदले रोज कम से कम अपनी तीन चार घण्टों की मिहनत देते हैं। उनके श्रम से जो कुछ आमदनी होगी वह पाठशाला के खाते में जमा होगी। किन्तु जिस आमदनी पर शिक्षक की तनखाह निर्भर नहीं होगी। प्रारंभ में कुछ भी आमदनी नहीं होगी। आगे चल कर कम या बेशी आमदनी हो जायेगी। आमदनी के द्वारा विद्यार्थी की औद्योगिक प्रगति की कसौटी अवश्य होगी। फिर भी, वर्धा योजना में स्वावलंबन चाहे जितने महत्त्व का हो, वह उस योजना का हार्द नहीं है। "तो क्या उद्योग की प्रधानता ही वर्धा योजना का हार्द है?" बहुत से लोग कहेंगे, "हां यही वर्धा योजना का हार्द है।" किन्तु यह भी सही नहीं है। औद्योगिक शिक्षा की जो संस्थाएं होती हैं उनमें उद्योग को प्राधान्य अवश्य है किन्तु उन संस्थाओं का वर्धा योजना से कोई संबंध नहीं है।

जो लोग यह मानते हैं कि औद्योगिक शिक्षा अलग है और बौद्धिक शिक्षा अलग, वे वर्धा योजना को कभी समझ नहीं सकेंगे। किताबी के द्वारा बौद्धिक विकास होता है और उद्योग द्वारा नहीं होता ऐसा जो मानते हैं वे भी वर्धा योजना को नहीं समझ सकेंगे। उल्टे वर्धा योजना की बुनियाद में यह भावना है कि उद्योग के द्वारा हम जितना बौद्धिक विकास कर सकते हैं उतना शायद किताबी पढ़ाई से होना नामुमकिन है।

वर्धा योजना का मुख्य उद्देश्य बौद्धिक विकास को अधिक सफल बनाता है। अगर इससे बौद्धिक विकास आज की अपेक्षा अधिक नहीं होता तो वर्धा योजना निष्फल है। अथवा उसको चलाने वाले अपना काम नहीं जानते थे, ऐसा ही कहना पड़ेगा।

वर्धा योजना का हार्द इस बात में नहीं है कि हम राष्ट्रापयोगी उद्योगधनर सफलता पूर्वक सिखावें। उसका हार्द इसमें है कि हम राष्ट्रापयोगी उद्योगों की तालीम उस तरीके से चलावें कि उद्योग की जानकारी के साथ साथ सफल समृद्ध और सर्वांगपरिपूर्ण जीवन के लिये आवश्यक सब विषयों का ज्ञान विद्यार्थी उसी समय, उसीके द्वारा हासिल करे। सिर्फ हासिल करे इतना नहीं किन्तु हजम करे और अपना कौशल्य उसके द्वारा बढ़ा सके।

इस उद्देश की सफलता के लिये यह अत्यावश्यक है कि शिक्षक उद्योग की कुशलता विद्यार्थियों में पैदा करते हुए उद्योग के सब अंगप्रत्यंगों का जीवनापयोगी सब विषयों के साथ निरन्तररूप से अनुबन्ध है, उसकी ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करे और इस अनुबन्ध के सहारे विद्यार्थियों को आवश्यक मात्रा में भिन्न भिन्न विषयों का ज्ञान देता रहे। अनुबन्ध बता बता कर आवश्यक मात्रा में जब ज्ञान दिया जाता है तब वह ज्ञान आसानी से लिया जाता है और बिना किसी परिश्रम के हजम भी होता है। स्कूल-कॉलेज के बाहर बाजाप्ता पढाई के बिना जीवन भर अनुभव के द्वारा जो ज्ञान लिया जाता है उसका बोझ कभी किसीको माछम नहीं पडा। प्राकृतिक मनुष्य जिस नैसर्गिक ढंग से जीवन भर ज्ञान प्राप्त कर लेता है उसी ढंग से ज्ञान प्राप्त करने की पद्धति वर्धा योजना में पसन्द की गयी है। मनुष्य के जीवन का नवदशांश हिस्सा आजीविका प्राप्त करने में खर्च होता है। किसी न किसी उद्योग और परिश्रम के द्वारा उसे अपनी आजीविका प्राप्त करनी पडती है और उसीकी सफलता के लिये उसे इधर-उधर की अनेक बातें जाननी पडती हैं। उसकी जानकारी जितनी अधिक उतनी ही उसकी जीवनसफलता भी अधिक। इसलिये आजीविका प्राप्त करने के लिये जो उद्योग करता है उस वक्त जागरूक रह कर जीवनापयोगी जानकारी जहाँ से मिल सके, वहाँसे वह हासिल करता रहता है। अगर जागरूकता तनिक भी कम हुई तो उसकी सफलता में उतनी ही न्यूनता आ जाती है।

जीवनव्यापार के साथ जिन जिन बातों का अनुबन्ध है उनके प्रति जागरूक रहनी यही वर्धा योजना का हार्द है। यह अनुबन्ध क्या चीज यह हमें प ले देखना होगा।

(क्रमशः)

बुनियादी तालीम का सम्मेलन

अक्टूबर महीने के अखिरी तीन दिन, २९, ३०, ३१ और नवंबर को पूने में बुनियादी तालीम का पहला सम्मेलन होना निश्चित हुआ है। दो बरस पहले अक्टूबर १९३७ में वर्धा में अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन हुआ था। उसके बाद शिक्षा की इस नई योजना पर साहित्यिक रूप से विचार और चर्चा करने का यह पहला ही अवसर है।

पर दो बरस पहले के वर्धा सम्मेलन और पूने के इस सम्मेलन में काफी अंतर है। वर्धा सम्मेलन के समय यह शिक्षा योजना केवल अपने स्रोत को छोड़ और सब के सामने एक कल्पना मात्र थी। इस की रूपरेखा भी स्पष्ट नहीं थी और इसकी संभाव्यता या असंभाव्यता भी एक चर्चा का विषय थी।

वर्धा सम्मेलन के बाद ही यह योजना धीरे धीरे मूर्तरूप लेने लगी। पाठ्यक्रम, नये शिक्षकों की तैयारी, अध्यापन मंदिर और बुनियादी स्कूल—यों एक के बाद एक विविध रूपों में इस का विकास होने लगा। स्कूल ही शिक्षा का एक नया साहित्य और एक नई परिभाषा भी तैयार होने लगी है। इस तरह वर्धा सम्मेलन से जो नये बीज के अन्तर्गत और सतेज अंकुर निकलने लगे हैं।

इसलिये यह समय ज्ञात है जब बुनियादी तालीम का काम करने वाले यह महसूस करने लगे हैं कि वे सब एक साथ मिलकर अपने किये हुए काम की चर्चा और आलोचना के कार्यका विचार करें। हमें अब सिद्धांतों पर बेहस नहीं करनी है। इस सम्मेलन का उद्देश तो अमली है। पहला कार्य जो हमें करना है वह यह है कि भिन्न भिन्न संस्थाओं में जो शिक्षा का प्रयोग करते हुए हमें जितना अनुभव मिला है, उसे श्रेणी-बद्ध इकट्ठा करके वैज्ञानिक रीति से उसे एक ऐसा वास्तविक रूप देना है जिससे वह सब के लिये अनुभवसुलभ और कार्यापयोगी हो। दूसरे, इस का प्रयोग करते हुए हमें जिन दिक्कतों और कठिनाइयों का अनुभव हुआ है, उन पर चर्चा कर के और एक दूसरे के अनुभवों से भेद देकर अपना रास्ता निर्धारण का प्रयत्न भी हमें करना है। इसलिये यह सम्मेलन शिक्षार्थियों व शास्त्रीय सम्मेलन नहीं बल्कि तो बुनियादी तालीम के कार्यकर्ताओं की

नई तालीम

[हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का मुखपत्र]

संपादिका — आशा देवी

भाग १

नवंबर १९३९

संख्या ११

सेगांव में गान्धी-जयन्ती

अक्टूबर महीने का पहला सप्ताह हिन्दुस्तान के लिये एक पवित्र सप्ताह समझा जाता है। इस समय इस देश के हर प्रांत की सभी स्थापित अपनी शक्ति और आदर्श के अनुसार गान्धीजी की जयन्ती मनाने की कोशिश करती हैं।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघने भी यह उत्सव मनाया था। हिन्दुस्तानी तालीमी संघ अभी थोड़े-दिन की संस्था है। इसलिये इस नई तालीम की ओरसे तालीमी संघके केन्द्र सेगांव में गान्धी जयन्ती मनाये का यह पहला ही अवसर था। बुनियादी तालीम की जो योजना है उसके केन्द्र में हिन्दुस्तान के देहाती बच्चे। इसलिये तालीमी संघकी ओरसे सेगांव में गान्धी जयन्ती का जो थोड़ासा आयोजन किया गया था, वह सेगांव के आस पास के देहाती बच्चों की और उन के शिक्षकों को लेकर हुआ।

मध्यप्रांतके वर्धा जिले में सब मिलकर कुल ४४ स्कूलों में तालीम के जरिये से इस नई तालीम का प्रयोग चल रहा है। पर सब बच्चों को बुलाना सम्भव नहीं था। इसलिये उस जगह के आस पास १०।१२ मील के दायरे के जितने विद्यालयों में शिक्षा का यह नया प्रयोग जारी किया गया।

उनके बच्चे और शिक्षकों के पास यह निमन्त्रण भेजा गया था कि वे अपनी स्कूलों में अलग अलग गान्धी जयन्ती न मना कर सेगांवही में इकट्ठा होकर एक साथ यह उत्सव मनावें। यह भी तय किया गया था कि हमारी शिक्षा पद्धति का जो मूल साधन है—खास आधार है, उसको केन्द्र में रखकर यह उत्सव मनाया जाय। इसलिये सब बच्चे और शिक्षकों की एक घण्टे की सम्मिलित कौतई का कार्यक्रम रकल गया। ऐसी आशा की गई थी कि स्वयं गान्धीजी भी इस सूत्रयज्ञ में उपस्थित रहें और हिस्सा लें। हमारी वह आशा पूर्ण हुई। उस समय वर्धा में कांग्रेस कार्य-कारिणी और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक चल रही थी। उसके सामने एक नाजुक परिस्थिति थी और बहुत तर्क-वितर्क निश्चय हो रहा था। गान्धीजी बहुत व्यस्त थे। पर इतना काम करी हैर भी उन्होंने बच्चों की ओरसे यह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और ठीक तीनों बजे बिना मण्ड में जा

कराब ५०० बच्चों और उनके शिक्षक कात रहे थे, आ उपस्थित हुए। सब बच्चे और शिक्षक अपने अपने साधन साथ लाये थे और आति से कात रहे थे। पर गान्धीजी के दर्शन से उस शांतिका भङ्ग हुआ, उनमें थोड़ीसी चंचलता छाई। जब शिक्षक उनकी इस अशांतिका शान्त करने में लगे हुए थे—गान्धीजीने एक कार्यकर्ताको बुलाकर कहा—“शिक्षा तो हुई नहीं। बच्चोंको तो इशारेसे ही शान्त होना चाहिये।”

सूत्रयज्ञका जो गम्भीर आदर्श कार्यकर्ताओंके सामने रहा वह शायद पूरा नहीं हुआ। ऐसे बहुतेरे प्रेक्षकोंकी भीड़ लग गई जो कातनेके लिये नहीं, सिर्फ देखनेके लिये उपस्थित थे। इसलिये इस अवसरपर जिस शांत वातावरणकी अपेक्षा थी वह पूरी नहीं हुआ। तब भी जिन कार्यकर्ताओंने इस उत्सव में भाग लिया उन्होंने बच्चोंको, उनके शिक्षकों को, और बच्चोंके परम मित्र और गुरु गान्धीजीको कातते हुए जरूर देखा। उन्होंने उस समय भावी इतिहास का जो चित्र सामने देखा उसका एक चिरस्थायी असर उनके दिलोंपर रह्य और उनके कानों में हमेशा प्रेरक बन कर उन्हें गीते देगा।

पहिले ऐसा निश्चय था कि गान्धीजी सिर्फ इस सूत्रयज्ञमें ही भाग लेंगे। उनसे और कोई मांग नहीं की जायगी। पर सूत्रयज्ञ के अन्तर्गत में तालीमी संघ के मन्त्री श्री आर्यनायकमजी ने उनसे प्रार्थना की कि वे बच्चों को दो एक शब्दों में थोड़ासा आशीर्वाद दें जो उनके भावी जीवन में एक अमोल खजाने का कोन देगा।

यह प्रार्थना भी उन्होंने स्वीकार कर ली और चंद मिनटों तक कुछ बातें कहीं—

पहात्मा गांधी का भाषण

मेरा व्याख्यान तो बच्चों के लिये है, दूसरों के लिये नहीं। आशादेवीने तो मुझको ऐसी आशा दिलवाई थी कि जो मेरी बात बोलेंगी वही व्याख्यान होगा, दूसरे व्याख्यान की आवश्यकता नहीं होगी। परंतु अभी माझूम आ कि उन्होंने अपने पतिसे मशविरा ना किया था। क्योंकि उनके पतिने दूसरी इच्छा प्रकट की है। वे कहते हैं कि मेरी बात की आवाज में क पास नहीं पहुंचेगी इसलिये कुछ

जबान की आवाज भी चाहिये। जिसे नई तालीम कहते हैं यानी जो सच्ची शिक्षा है, उसके वे मंत्री हैं—इसलिये उनकी बात माननी चाहिये।

इसलिये, मैं बच्चों से कहता हूँ कि हम जो मुंहसे बोलते हैं उसकी कीमत हो या न हो पर जो काम करते हैं उसकी कीमत जरूर है।

मैंने अभी ५० मिनट तक काता। मुंहसे तो बोलता नहीं था, मगर मैंने जो सूत काता उसकी कीमत संसार में सदैव रहेगी। तुमने जो एक घंटे काता उसकी कीमत तुम्हें मिली। वह तुम्हारे नाम खाते में लिख दी गई। इसलिये जो तुम नई तालीम की शिक्षा लेते हो उसकी कीमत हो या न हो, पर जो काम करते हो उसकी कीमत फूर है।

मेरे निमित्त आप यहां एकत्र हुए हैं। लेकिन जब यहां से लड़के लोग यह निश्चय कर के चले जायेंगे कि जैसे हमने यहां काता है वैसे ही हम रोज के यज्ञ के समान सच्चा कातव्य रहेंगे तो बहुत अच्छा होगा।

यह छोटीसी बात मैंने कही। यदि वह तुमने भानली तो बड़े होने पर तुम समझोगे कि मैंने ठीक कहा था। ईश्वर सबको दीर्घायु करे जिसमें इस बातका वे अनुभव कर सकें।”

बापू का यह आशीर्वाद सिर्फ मण्डपमें जो बच्चे उपस्थित थे उनके ही लिये नहीं है, बल्कि हिन्दुस्तान के सब बच्चों के लिये है।

बुनियादी तालीम की यात्रा

भिखले तीन महीनों से बुनियादी तालीम की यात्रा के सिलसिले में मैं हिन्दुस्तान के एक प्रति मेरे दूसरे प्रांत में घूम रहा हूँ। मध्यप्रांत में तो मैं रहता और काम ही करता हूँ। इसलिये इस प्रांतके प्रयोग से तो मेरा रात दिनका संबंध है। पर दूसरे प्रांतों के प्रयोगों से मेरा परिचय इतना निकट का नहीं है। इसी कमी को पूरा करने के लिये मैं इस यात्रा में निकला था।

सबसे पहले मैं बिहार के चंपारण जिलेके बेतिया थाने में गया, जहां एक छोटेसे १० मील के दायरे में लगभग २५ स्कूल हैं और करीब ६० शिक्षक काम कर रहे हैं।

इसके बाद आंध्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक और उड़ीसा आदि प्रांतोंमें—जहाँ जहाँ बुनियादी तालीम का प्रयोग चल रहा है—मैंने कुछ समय बिताया। मैंने प्रैक्टिंग स्कूल भी देखे और जहाँ तक संभव हो सके उन देहाती शालाओं को भी देखा जहाँ बच्चों को लेकर स्कूलों में प्रयोग चल रहा है।

मुझे अपनी इस यात्रा में काफी अनुभव हुए और स्कूल अध्ययन करने को मिला।

बरसात के दिन थे कि देहात में यमने का सबसे कठिन समय है। पुराने जमाने में ऐसा नियम था कि बरसात के चार महीने कोई भी भिक्षु या पथिक यात्रा नहीं करते थे। पर जिन्हें देहाती तालीम की यात्रा करना है, उन्हें तो मैं कहूंगा कि वे बरसात के दिनों में ही वहां जायें। क्योंकि किसी भी शिक्षा के प्रयोग की असली जांच इसी समय हो सकती है। रास्ते तो प्रायः बंद ही रहते हैं। घर गीले रहते हैं, पाठशालायें भीगी रहती हैं, बच्चों के कपड़े सूख नहीं पाते और गांव की सफाई के बारे में भी जितना कम कहा जाय उतना ही अच्छा होगा। बीमारियाँ भी देहात में इन्हीं दिनों फैलती हैं और काम की मार भी इन्हीं दिनों रहती है। छोटे बच्चे सभी को खेती में जुटना पड़ता है। इसलिए शिक्षा की जो व्यवस्था इस संकट के समय में देहात में कुछ काम कर सकती है, वहीं सच्ची शिक्षा होने का दावा कर सकती है, ऐसा समझना चाहिये।

इसी उद्देश्य को लेकर मैं बरसातके दिनों में ही निकला। मुझे खुशी है कि मेरा उद्देश्य बहुत हद तक पूरा भी हुआ। बहुतसी स्कूलों में मैंने बड़े दुख के साथ देखा कि स्कूल तो इमारत छोटी है, जगह नहीं है, पानी बरस रहा है, गीली जगह में बैठकर बच्चे भिगी पूनियों से सूत कात रहे हैं। यह सुन देखकर मैंने अनुभव किया कि अगर बरसातके समय हमें स्कूल के बच्चों के लिए सच्चे आश्रय और कामका उपयुक्त स्थान बनाना है तो सबसे पहले हमें उसकी इमारत और शिक्षा के साधनों की ठीक व्यवस्था करनी होगी।

यह तो हुई शिक्षा की बाहरी व्यवस्था की बात। पर इस नई मद्धति के भीतरी रूपका—उद्योग के जरिये शिक्षा के इस नये तरीके का देखा अनुभव बहुत ही आशाजनक रहा। मैंने देखा कि चाहे स्कूल की इमारत कितनी ही महीन हो, मनहूस क्यों न हो, शिक्षा के साधन चाहे अस्पष्ट हों, शिक्षक भी इस नये तरीके से शिक्षा देने में मजे हुए न हों और दस्तकारी भले ही बच्चों को शिक्षा का पूर्ण साधन न बनी हो—पर इतना तो अवश्य हुआ है कि परिस्थितियों के कारण अपनी सारी कर्मियों और कमजोरियों के रहते हुए भी, यह शिक्षा पद्धति बच्चों को आनंद और स्फूर्ति का साधन तो जरूर बन गई है। ‘शिक्षा का पूर्ण साधन चाहे न मिले’—मैं इसलिए कह रहा हूँ कि उद्योग को बच्चों के सर्वांगीण विकास का साधन प्रसूत करना जाना जाय, इसका ज्ञान अभी बहुतेरे

शिक्षकों के सामने स्पष्ट नहीं है। उनमें हाल इतनी उत्प-
रत और आत्मविश्वास नहीं जगे हैं कि जिसे धैर्य साथ
जहां भी उचित मौका मिले, उसे उद्योग की मदद से बच्चों
को ज्ञान संचय करने में प्रोत्साहन दे सकें। आज तो सिर्फ पाठ्य-
क्रम के विषयों के साथ खींचतानकर उद्योग का मेल मिलाने
की बनावटी शिंश की जाती है। उद्योग तो अभी तक
उनके हाथों में ही खेल रहा है। ज्ञान बढ़कर वह (उद्योग)
अभी तक उनके दिमाग में नहीं पहुंच पाया है। अभी उद्योग
और शिक्षा को वे अभिन्न रूप में हजम नहीं कर सके हैं।

पर मैं इन सारी बातों से अंधरे और हताश नहीं हुआ
हूँ। मैं अच्छी तरह समझ करता हूँ कि शिक्षा की इतनी
बड़ी शक्ति इतने थोड़े दिनों में सफल नहीं हो सकती।
हमारा रास्ता नया और ध्येय बहुत कठिन है। इसलिये
हमें धीमे किंतु निरंतर कदम बढ़ाते चलना है। इस मौजूदा
शिक्षा पद्धति से हमें ऐसे शिक्षक तैयार करना है जो एक ही
साथ वैज्ञानिक कारीगर और नए शिक्षक हों। इस ध्येय
तक पहुंचने में हमें समय लगेगा, धैर्य की आवश्यकता
रहेगी और कई रुकावटों का सामना करना होगा। पर यह
बात तो साबित हो चुकी है कि इस उथल पुथल और
अव्यवस्थित हालात में भी हमारा इस नई तालीम की दिशा में
जो असंपूर्ण प्रयास हो रहा है, वह पुरानी पद्धति से कहीं
अधिक अच्छा है। आज बच्चे और शिक्षक उस पुराने
क्रियावी दागरे से निकलकर एक प्रत्यक्ष अनुभव के राज्य में
शिक्षा कर रहे हैं।

बरसात की इन पाधाओं और असुविधाओं के अलावा
उड़ीसा के अनुभव भी हुए। इसी सिलसिले में मैंने
उड़ीसा में बंग का शिक्षण केंद्र भी देखा। हिन्दुस्थान के
भिन्न भिन्न प्रांतों में आज जितने ट्रेनिंग स्कूल काम कर रहे
हैं उनमें से शायद उड़ीसा के बरीका शिक्षण केंद्र ही बुनि-
यादी तालीम के आदर्श की सबसे अधिक निबिह रहा है।

यहां मैंने अनुभव किया कि कोई भी संस्था अगर बुनि-
यादी तालीम का सच्चा केन्द्र हो सके तो वह कितनी काम
कर सकती है। बरी का यह केन्द्र शहरों से और शहरी
वातावरण से बहुत दूर एक देहाती इलाके में बसा है।
इस की इमारत, इसके शिक्षा साधन तथा शिक्षक और
विद्यार्थी सब एक आदर्श देहाती वातावरण से ओतप्रोत हैं।
सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि बरी में ही श्री गोपबन्धु
चौधरी और उनकी पत्नी रमादेवी की आश्रम 'सेवाधर' भी
है। आश्रम आज कई वर्षों से ग्राम संगठन का दोस कार्य
कर रहा है। इसीलिए इसके वातावरण और शिक्षकों के

व्यक्तिगत प्रभाव रहकर इस ट्रेनिंग स्कूल के विद्यार्थी सच्चे
शिक्षक तैयार हो रहे हैं।

इसी बरसात में बरी के आस पास के देहातों में बड़ा
खतरनाक हैजा फैला था। इस व्याधि को रोकने में आश्रम
के कार्यकर्ताओं के साथ इस ट्रेनिंग स्कूल के विद्यार्थियों
और शिक्षकों ने भी पूरा हाथ बँटाया। दरअसल मैं यही
तैयारी बुनियादी तालीम के शिक्षकों की सच्ची तैयारी है।
गोपीजी ने 'बुनियादी-राष्ट्रीय-शिक्षा' की प्रस्तावना में लिखा
है कि इस शिक्षा पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि
यह देहाती है। इसलिये जब देहाती वातावरण में देहात के
जीवन और उसके सवालों को हम हमारी शिक्षा का सच्चा
साधन बनायेंगे तभी हमारा यह प्रयोग सफल हो सकेगा।

आर्यनन्दकर्म

युक्तप्रांत में बुनियादी तालीम

युक्तप्रांत की सरकार ने बुनियादी तालीम की योजना को
स्वीकृत किया है; इसलिये अब प्रांतभर की सारी प्राथमिक
पाठशालाओं में यह नई पद्धति जारी की जायगी। आशा
की जाती है कि धीरे धीरे सारे विद्यालय बुनियादी
तालीम के विद्यालयों में बदल जायेंगे। अभी तो केवल
विद्यालयों के पहले दर्जे में ही इस नई पद्धति का प्रयोग
शुरू हुआ है। पर जैसे जैसे स्कूलों के सब दर्जों में इस
नई पद्धति का प्रयोग बढ़ता जायगा, प्राथमिक विद्यालयों का
और उच्च विद्यालयों का अंश भी जाता रहेगा।

इस नई तालीम के शिक्षक तैयार करने के लिये, करीब
एक साल से इलाहाबाद में एक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज काम कर
रहा है। इस कॉलेज में ऐसे शिक्षक तैयार किये जा रहे हैं
जो डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की प्राथमिक स्कूलों के मौजूदा शिक्षकों
को लेकर बुनियादी तालीम के शिक्षक तैयार कर सकेंगे।
इसलिये इस ट्रेनिंग कॉलेज को हम शिक्षकों के शिक्षक तैयार
करने का कॉलेज कह सकते हैं। इस कॉलेज में आम तौर
पर प्रिन्सिपल दर्जे के शिक्षक ही भरती किये जाते हैं।

पिछले अप्रैल में इस ट्रेनिंग कॉलेज से ४५ शिक्षक तैयार
होकर निकले हैं और ये अब इस प्रांत के सात केंद्रों
डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के शिक्षकों को बुनियादी तालीम की पद्धति
से तैयार कर रहे हैं। हर एक केंद्र में सात जिलों से जुने
हुए २५० डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के शिक्षकों को इस नई तालीम
की शिक्षा दी जा रही है। इनका पाठ्यक्रम २५ महीने
का है। हर एक केंद्र में ५६ अध्यापक हैं। यहां तकली

पर कताई, गत्तेका काम, खेती और बान्बानों और चित्रकला आदि में यथा संभव अभ्यास कराया जायगा। इसके साथ-साथ इस नई शिक्षा पद्धति में शिक्षा का उद्योग के साथ जो संबंध है उसके बारे में भी व्याख्यान दिये जायेंगे। १० अगस्त को युक्त प्रांत के शिक्षा मंत्री ने इलाहाबाद जिल्ले के एक प्राथमिक विद्यालय में एक ऐसे नये वर्ग का उद्घाटन करते हुए घोषणा की थी कि प्रांत भर के ७ केन्द्रों में १७५० विद्यालयों में इस पद्धति का प्रयोग शुरू हो गया है।

अब २५० शिक्षकों की दूसरी टोली तैयार हो रही है और ऐसी अपेक्षा की जाती है कि इस कार्यक्रम से साल भर में ७००० शिक्षक तैयार होकर ७०००० सात हजार प्राथमिक स्कूलों में बुनियादी तालीम का प्रयोग शुरू किया जा सकेगा।

डॉ० खान एक उत्कृष्ट शिक्षा शास्त्री हैं। उनका यह विश्वास है कि उनके हाथ में आज एक ऐसी शिक्षा योजना आई है जिससे शिक्षा पद्धति में नया जीवन लाया जा सकेगा और वह चाहा काम कर सकेगी।

शिक्षकों को तैयार करने के लिये सबसे पहली आवश्यकता है—छोटे बच्चों को लेकर प्रत्यक्ष प्रयोग करने की। इसलिये म्युनिसिपल स्कूल से करीब १०० बच्चे उधार लिये गये हैं। इन्हीं बच्चों पर तालीम का सक्रिय प्रयोग करते हुए इस ट्रेनिंग की सारी शिक्षा व्यवस्था चलाई जा रही है।

कॉलेज का मकान बहुत बड़ा है और साथ ही जमीन भी काफी है। एक पुराने छापराने की मरम्मत करवाकर उसमें कॉलेज और छात्रावास दोनों का काम चलाया जाता है। कॉलेज का भाग बहुत सफ सुधरा और सुंदर है। इसमें प्रवेश करते ही यह स्पष्ट जाहिर होता है कि बच्चों की शिक्षा में कला को कितना महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सारा वातावरण कलात्मक है। कॉलेज की दीवारों, फर्श और बैठने के आसन तक सुरुचि और सौंदर्य प्रियता के स्पष्ट चोटक हैं। शिक्षक और छात्र सब के मुख पर प्रसन्नता और प्रफुल्लता की छाप है। वे लोग बड़े उत्साह और स्फूर्ति के साथ अपने-अपने कामों में लगे हुए हैं। भीतर कदम रखते ही पुरानी और नई शिक्षा पद्धतियों का अंतर मार्मिक पढ़ने लगता है। यही इस शिक्षा केन्द्र की शोभा है।

शक्ति-निकेतन के कलाभवन से शिक्षा प्राप्त चित्रकला के शिक्षक इस कॉलेज में काम कर रहे हैं। उनके सहयोग से वे लोग जिन्होंने कभी कुची के हाथ भी नहीं लगाया था—कला की सृष्टि कर रहे हैं। और जिनमें पहिले ही से कुछ शक्ति है वे विशेष कदम बढ़ रहे हैं। यहां चित्र-पुस्तकों से या शिक्षक के खींचे हुए नमूनों से नकल करने की शिक्षा नहीं दी जाती। यहां तो यही

प्रयत्न किया जाता है कि हर एक शिक्षक अपने अंतर की धारणा के अनुसार कुछ न कुछ तैयार करे। कला की शिक्षा में खास करके इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि कच्चे कम खर्च में थोड़े तौर पर काम चले। बाजार के मामूली रंगों से काम लिया जाता है और दीवाली के समय बाजार में पैसे पैसे में जो चार मिट्टी के दिये मिलते हैं उन्हीं में रंग-घोलकर रखा जाता है। बांस की पतली लकड़ी से ही कुर्ची का काम लिया जाता है।

डॉ० खान साहब इस कॉलेज में बुनियादी तालीम का एक नया रूप देने की कोशिश कर रहे हैं। किसी एक खास दस्तकारी का कलना माध्यम न मानकर वे एक साथ कई उद्योगों और कलाओं के समावेश के जरिये शिक्षा देने का प्रयोग कर रहे हैं। बच्चे एक ही साथ बागबानी, कताई, गत्तेका काम, आदि विषयों में शिक्षा पा रहे हैं। चित्रकला और संगीत, खेल कूद और कहानियों को तो स्थान है ही। इनके साथ साथ बुनाई का खेल भी चलता है।

पर इस संस्था के कार्यक्रम की सभी प्रवृत्तियों के केन्द्र में कला का स्थान है। मानों सारे शिक्षणीय विषयों का कला के सुर से सुर मिलकर, खान साहब एक सुरीला संगीत रच रहे हैं। इस संगीत की रचना में तो कुछ स्पष्ट लगेगा, पर अभी तक जो काम हुआ है उससे मैंने देखा कि बच्चों के जीवन में एक नई स्फूर्ति और सजीवता जागृत हो रही है और शिक्षा में क्रांतिके युग का प्रारंभ हो गया है।

(राष्ट्रवाणी से)

समाज के अभ्यास के पाठ्यक्रम का

एक प्रयोग

सबसे अधिक सवाल और प्रश्न जो हमारे पास आते हैं, वे होते हैं सामाजिक अभ्यास के पाठ्यक्रम के विषय में। तीनों के पहिले पांच बादशहों की कहानी कहसि मिले? किस प्रसंग पर इस कहानी को कहें? आदिम मानव की कहानी सात साल के बच्चों के लिये अच्छा है या नहीं? ऐसे प्रश्न हम रोज सुनते हैं और इनका जवाब देने की कोशिश भी करते हैं। ऐसे बहुतरे सवालों का जवाब तो पिछले अंक में दिये विनोबाजी के भाषण में मिला होगा। मैं यहां सिर्फ उनका जो मुख्य वक्तव्य है, उसकी ओर शिक्षकों का ध्यान खींचना चाहती हूँ। “पाठ्यक्रम के पीछे जो दृष्टि है वह महत्व की है न कि वहां लिखी हुई कहानियां।”

समाज के अभ्यास के पाठ्यक्रम के पीछे जो दृष्टि है उसे विनोबाजी ने अपने भाषण में स्पष्ट किया है। पाठ्यक्रम में जो तीसरी मुख्य बात है, 'संस्कार श्रमता या नागरिक जीवन' की शिक्षा, उसे हम इस पाठ्यक्रम का मुख्य अंग मानते हैं। इस सिलसिले में सेगांव के बुनियादी स्कूल के बच्चों को लेकर प्रत्यक्ष प्रयोग करते हुए जो अनुभव हमें मिला है उसका थोड़ासा परिचय मैं यहां देना चाहती हूँ—इस आशय से कि दूसरे शिष्टकों को इससे सहायता मिले।

नागरिक जीवन की शिक्षा में सबसे पहला स्थान है स्वच्छता और सफाई की शिक्षा का, जिसे विनोबाजी ने एक 'सुर' नाम दिया है—'रूप दर्शन'। वास्तव में विद्यालय के कार्यक्रम का प्रारंभ इस रूप-दर्शन से ही होना चाहिये। इस शिक्षा के लिये जितना भी समय देना पड़े हमें उसे पाठ्यक्रम के अभ्यास के समय का अवश्य हमें समझें। अगर बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा के पाठ्यक्रम का अक्षरशः अनुसरण भी करना हो तो भी सामान्य विज्ञान और सामाजिक अभ्यास के लिये जो आधा घंटा समय इस्तेमाल किया है, अगर शुरू में वह पूरा समय भी इस काम के लिये देना पड़े तो हम दें। यह दोनों के पाठ्यक्रम का एक मुख्य अंग तो है ही पर उससे भी बड़ी बात यह है कि यह सारी शिक्षा का मूल आधार है। शिक्षक यदि श्रद्धा के साथ काम करे तो जैसे स्कूल का काम आगे बढ़ता जाएगा—यह प्रथम भी कम होता जायगा। फिर तो विद्यार्थी खुद ही साफ सुथरे रहने लगें और नये विद्यार्थियों को साफ रखने की जिम्मेदारी भी व खुद ही उठा लें। मतलब यह कि एक बार का साफ और सुथरा बनावट वातावरण ही अपना काम करता रहेगा।

इसके बाद विद्यार्थियों का आदमी व्यवहार, दूसरों के साथ व्यवहार, वर्ग में व्यवहार और खेल के मैदान का व्यवहार—इस बारे में जो सूचनाएँ पाठ्यक्रम में दी गई हैं, उसकी शिक्षा जब विद्यालय के सारे कार्यक्रम में ओतप्रोत हो जायगी तभी हमारा उद्देश्य सफल हो सकगा। सेगांव की बुनियादी स्कूल में इस शिक्षा को हमने हमारे सारे कार्यक्रम का एक मुख्य ध्येय माना है, और सारा कार्यक्रम इस तरह से बांटा गया है कि जिससे विद्यालय की श्रेष्ठ प्रवृत्ति में विद्यार्थियों को नागरिकता की शिक्षा का सच्चा अवसर मिले।

हम यह विश्वास है कि नागरिकता की शिक्षा देने के लिये हमें अच्छे उपाय हैं। विद्यार्थियों को खुद कामों

की जिम्मेदारी लेने का पूरा अवसर देना। इसी उद्देश्य को लेकर विद्यालय के छोटे बड़े सब काम की और सारी व्यवस्था की जिम्मेदारी बच्चों पर ही सौंप दी गई है। शिक्षक का काम सिर्फ इतना ही है कि वह उनका मार्ग-निर्देश करे और जरूरत के मुताबिक उनके काम में मदद पहुंचाये।

अब हम यहां हमारे विद्यालय की दिनचर्या का एक थोड़ासा विवरण दें तो शायद हमारा ध्येय समझाना आसान होगा। विद्यालय का कार्यक्रम सेबरे ७। बजे शुरू होता है। जिन बच्चों को बगीचे का काम सौंपा गया है वे पौधों में पानी डालते हैं, जलपान के मंत्री गो-शाल से दूध लाकर गरम कर देते हैं, सफाई-मंत्री स्कूल का कमरा साफ कर साफ करता है और बाहरी सफाई का मंत्री अहाते को साफ करता है, और भी मंत्री हैं—बाल की सफाई का मंत्री बाल साफ करता है या नहीं यह देखकर तेल देता है। सबका यह कर्तव्य पूरा होने पर स्कूल के दालान में झंडाबंदन और कतायद होती है। इसकी व्यवस्था भी बच्चों के अपने हाथ में है।

इसके बाद दूध पीकर बच्चे स्कूल का काम आरंभ करते हैं। दूध मुड परोसना, खाने के बाद उस जगह को ठीक साफ करना आदि कार्य भी उन्हीं के हाथ में है।

दावाज, कलन पेन्सिल, कागज, स्कूल के काम के समय तकली लपेटे आदि बाटना, काम के बाद उन्हें व्यवस्थित रूपसे रखना स्कूल का काम होने के बाद स्कूल का कमरा साफ कर सारा सामान व्यवस्थित रूपसे रखना आदि सारे काम बच्चे ही करते हैं।

इतना ही नहीं कोई खास उत्सव या त्यौहार मनाने की जिम्मेदारी भी बच्चों के हाथ में है। पिछले तीन महीनों में बच्चों ने ऐसे तीन उत्सव मनाये। एक जन्माष्टमी, दूसरा गणेशोत्सव और तीसरा गांधी-जयंती। जन्माष्टमी और गणेशोत्सव के लिये विद्यालय को सजाना, पूजा की व्यवस्था करना, उत्सव के लिये आवश्यक चीजों का इंतजाम करना या खरीदना, गांव के लोगों को निमंत्रण देना आदि सब काम बच्चों ने बड़े उत्साह और होशियारी से किये। गांधी-जयंती का विवरण अन्तर्गत दिया गया है।

यह उत्सव तो सामूहिक रूप से हुआ था। इसलिये इसकी पूर्ण जिम्मेदारी उठावा तो उन्नती शक्ति के बाहर की बात थी। तब भी उस की व्यवस्था में एक बहुत बड़ाने हिस्सा स्कूल के बच्चों ने लिया था।

सुबह से शाम तक के लिये दैनिक कार्यक्रम को हम नागरिकता की शिक्षा का समय मानते हैं और उनकी

सारी प्रवृत्तियों को हम सगाज के अभ्युत्थान का पाठ्यक्रम समझते हैं।

यह सारा कार्यक्रम उनकी अपनी जिम्मेवारी से और व्यवस्था से चले, इसी उद्देश्य से बच्चों की एक सभा स्थापित की गई है। हर शनिवार को सुबह विद्यालय के साधारण कार्यक्रम के बदले बच्चों की इस सभा की बैठक होती है। हर हफ्ते सभापतिजी का चुनाव होता है, और वही की सदातः सभा का सब काम चलता है।

सभा में गायन, संगीत, खेल, नकल आदि साधारण कार्यक्रम तो रहते ही हैं पर उसका मुख्य कार्यक्रम तो रहता है अपने विद्यालय की जीवन की व्यवस्था, मंत्रियों का चुनाव, उनके कार्यों की समालोचना और विद्यालय की व्यवस्था संबंधी चर्चा। बच्चों के इस छोटे से राष्ट्र में यह सभा व्यवस्थापिका सभा का काम करती है।

ऐसी ही एक सभा का वर्णन यहां हम करेंगे जो शायद अनुचित न होगा, बल्कि हमारा ध्येय अन्य शिक्षकों पर अधिक स्पष्ट हो सकेगा।

तारीख १-१०-३९ की सभा का जिक्र है। सुबह का बगीचे में पानी देना, गो-शाला से दूध लाकर गरम करना, झंडा बंदन, व्यायाम, दूध पीना, स्कूल के काररे की सजाई, सभा की व्यवस्था और सजावट, सारे कार्य पूरे हो चुके हैं। सभा के सारे सदस्य सब अपनी चटाई पर बैठकर तकली चला रहे थे। विद्यालय के दो शिक्षक, मैं और गांव के दो चार सज्जन निमंत्रण पाकर उपस्थित हैं। पर हम हैं निमंत्रित अतिथि, हमारा मत देने का कोई अधिकार नहीं है।

पहला कार्यक्रम अध्यक्ष का निर्वाचन था। दो तीन नाम प्रस्तावित हुए, अनुमोदित हुये और बहुमत से 'हरि' अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 'हरि' ने बड़ी गंभीरता के साथ अपना आसन ग्रहण किया। सभा की अध्यक्षता के साथ साथ उनकी तकली भी चल रही थी फिर वक्ताओं ने अपना अपना नाम सुझाया। पहले वक्ता का वक्तव्य बड़ा गंभीर था। गांव की सफाई के लिये अब तक जो एक भंगी था, उसे उठो हो गई है। गांव के कुछ भाई इस जिम्मेवारी को अपने सिर उठा रहे हैं। वृण स्कूल के भाई इस कार्य में मदद देने तो तैयार हैं क्या वे इसका अनुमोदन करेंगे? यो सलाह मशविरों के बड़ा बंद स्तम्भ मंजूर हो गया।

और एक छोटे से बच्चा खड़े हुए आपने शिकायत पेश की कि भाई लोग स्कूल से गांव जाते हुए सभ्य नागरिकों का व्यवहार नहीं करते बड़े बुरे लाल मचाते हैं,

इसलिये इसकी खास व्यवस्था के लिये एक मंत्री नियुक्त किया जाय। पर यह प्रस्ताव बहुमत हासिल न कर सका। दूसरों ने कहा कि इस तरह तो हम सारे लोग मंत्री बन जायेंगे और कार्य चलना ही मुश्किल हो जायेंगे।

फिर हरी घास के लिये अभी से जमीन तैयार करने की आवश्यकता पर एक प्रस्ताव पास हुआ। सभा में सेगोव आश्रम की खेता और गोशाला के संचालक श्री पारनेरकरजी उपस्थित थे। उनसे हल और बखर की प्रार्थना की गई जो मंजूर हुई।

इस के बाद पदाधिकारियों के चुनाव का विशेष कार्य शुरू हुआ। भिन्न भिन्न मंत्री केवल एक पखवाड़े के लिये चुने जाते हैं। एक पखवाड़ा खतम हो चुका था, अब दूसरे पक्ष के लिये नये मंत्रियों का चुनाव आवश्यक था।

मत देने का अधिकार गणतंत्र की सबसे मूल्य की बात समझी जाती है। इस अधिकार का पूरा उपयोग बच्चों की इस सभा में होता है। हर एक विभाग (Portfolio) के लिये बहुत नाम सुझाये गये। आखिर कभी बार हाथों की गिनती के बाद नीचे लिखे विभागों के मंत्री चुने गये। विद्यालय की भीतरी स्वच्छता का मंत्री, बाहरी स्वच्छता का मंत्री, तकली के मंत्री, लपेटे के मंत्री, चटाई के मंत्री, स्लैट और खड़िया के मंत्री, दावात, कलम, कागज के मंत्री, पौजन के मंत्री, स्कूल की खेती के मंत्री, फूल के बगीचे के मंत्री, शरीर सफाई के मंत्री, आहार विभाग के मंत्री, आदि।

इस तरह सभा का काम तो पूरा हुआ। पर एक जो नई जिम्मेदारी इन भावी नागरिकों ने उठाई, उसका तो अभी प्रारंभ ही है। अब तक इनकी प्रवृत्तियां स्कूल की जीवन न ही सीमित थीं। पर अब पहली ही बार स्कूल के जीवन से एक कदम आगे बढ़ कर वे गांव के जीवन में हिस्सा लेने और इसकी जिम्मेदारियों को उठाने तैयार हो रहे हैं। इस तरह नागरिकता की शिक्षा की दूसरी सीढ़ी पर उन्होंने कदम रक्खा है। पहिले ही जिन कामों की जिम्मेदारी इन्होंने उठाई है, वह भी बड़ी कठिन है। उनके मां-बाप, उनके अपने साथी ही उनका विरोध कर रहे हैं। उन्हें गालियां भी खिनी पड़ती हैं, घुड़गियां और मार भी सहनी पड़ती है। इस तरह स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या कम भी हो गई है।

अभी यह कहानी अधूरी है। पर यदि उन्होंने लगन और शांति के साथ काम किया तो तीन के पांच सप्ताहों की कहानी वे जानें या न जानें, पर समाज के अभ्युत्थान का भोक्तृका वे हो चुके, ऐसा हम मान लेते हैं।

मध्यप्रान्त में बुनियादी तालीम

बुनियादी तालीम का प्रयोग हर एक प्रान्त में अपना एक खास रूप ले रहा है, और ऐसा लगना चाहिये। मध्यप्रान्त में इस नई तालीम के प्रयोग के लिये बिल्कुल नये शिक्षकों की एक टोली तैयार की गई है, और शिक्षा के क्षेत्र के लिये एक ऐसा इलाका चुना गया है, जहाँ शिक्षा आज तक कोई प्रबंध नहीं था। इसीलिये इस नये क्षेत्र में नये शिक्षकों एवं नये साधनों से यह प्रयोग शुरू हुआ है। इस प्रयोग का भावी विकासित रूप देखने को हम बड़े उत्सुक हैं।

युक्तप्रान्त और बंबई के प्रयोग एक दूसरे ही रूप में हो रहे हैं। इन प्रांतों में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मौजूदा शिक्षकों को इस नई पद्धति में तैयार किया जाता है और तब उन्हें स्कूलों के एक या दो वर्गों के बच्चों के लेकर इसका प्रयोग किया जाता है। यहाँ इस प्रयोग के लिये नये मदरसे और नये शिक्षकों का प्रबंध नहीं किया गया है। इस प्रयोग से हमें नई और पुरानी दोनों शिक्षा पद्धतियों का अनुभव एक साथ ही मिल सकता है।

मध्यप्रान्त में यह प्रयोग दोनों तरीकों से हो रहा है। सबसे पहले मध्यप्रान्त के प्रधान मंत्री, पंडित रविशंकरजी शुक्ल की विद्यामंदिर योजना के लिये नये शिक्षक तैयार किये गये। इन शिक्षकों की तैयारी के लिये वर्धा में जो विद्यामंदिर ट्रेनिंग स्कूल स्थापित हुआ, उसीमें बुनियादी तालीम का पहला प्रयोग शुरू हुआ। आज मध्यप्रान्त के भिन्न भिन्न जिलों में ऐसे करीब एक सौ विद्यामंदिरों में इस नई तालीम के अनुसार शिक्षा प्रारंभ चल रहा है। शुक्लजी की योजना के अनुसार तो शिक्षा का खर्च चलाने के लिये भूमि की व्यवस्था की गई है। पर यह भूमि आज इन विद्यालयों का सिर्फ आर्थिक आधार नहीं है, देहात के बच्चों की शिक्षा के लिये एक सुझावातावरण तैयार किया गया है।

मध्यप्रान्त की सरकारने तो बुनियादी तालीम को अपने प्रांत के लिये स्वीकार कर लिया है। प्रांत में कुल १५०० विद्यामंदिर खुल भी गये हैं। पर यह तो प्रारंभ मात्र है। हमारे प्रांत में इस पद्धति के प्रचार करने का मतलब है डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्युनिसिपैलिटी आदि स्थानिक स्वराज्य संस्थाओं की देखरेख में चलनेवाली करीब ५०० प्राथमिक शालाओं को भी धीरे धीरे बुनियादी तालीम के मदरसों में बदल देना और इन स्कूलों में काम करने वाले करीब १८००० शिक्षकों को नई पद्धति के मुताबिक तैयार करना। पर इसका ही वसन होगा। आज मध्यप्रान्त और बरार के कुल चौबीस हजार गांवों में से सिर्फ सोलह हजार गांवों में ही नाम मात्र की शिक्षा की व्यवस्था है। शेष चौबीस हजार गांवों में तो शिक्षा का नाम भी नहीं है। ऐसी हालत में ७ से १४ साल के बच्चों के लिये मुफ्त और लाजिमी शिक्षा का प्रबंध करना असंभव सा माहसूस होता है।

इस ध्येय के पूरा होने की उम्मीद तभी की जा सकती है जब स्थानिक स्वराज्य संस्थाओं का इस में उत्साहपूर्ण सहयोग हो। इसी खयाल से १९ और २० अक्टूबर को वर्धा में मध्यप्रान्त और बरार की स्थानिक संस्थाओं के अध्यक्ष और प्रतिनिधियों की एक शिक्षा परिषद हुई थी। इस शिक्षा परिषद में डिस्ट्रिक्ट कौंसिल और म्युनिसिपैलिटी आदिसे कुल १८ प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे। सब से पहले मध्यप्रान्त के प्रधान मंत्री पंडित रविशंकरजी शुक्लने मध्यप्रान्त की सरकार की ओर प्रतिनिधियों का स्वागत किया और बुनियादी तालीम के प्रचार के लिये सरकार की ओर से जो व्यवस्था की गई है उसका थोडासा विवरण दिया। अर्थात् हमें आपने प्रतिनिधियों से प्रार्थना की कि वे इस नये तरीके का प्रयोग कर देखें और इस बात का विश्वास रखें कि इसकी व्यवस्था आदिके खर्च के लिये सरकार भी उनका हाथ बँटायेगी।

शाम को चार से पांच बजे तक गांधीजी ने इन प्रतिनिधियों को एक घंटे का समय दिया था। दो दिन की विचार और चर्चाके बाद सर्व सभ्यति से नीचे दिये दो प्रस्ताव मंजूर हुए।

(१) मध्यप्रान्त और बरार की स्थानिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को यह परिषद, पूरी तरहसे विचार करने के बाद, बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा की योजना को, जिस रूप में जाकिर हुसेन कमेटी ने उसे प्रस्तुत किया है, मान्य करती है; और वह प्रान्तीय सरकार के इस प्रस्ताव को स्वीकार करती है कि उक्त योजना को स्थानिक संस्थाओं की शालाओं में जारी किया जाय। शर्त यह है कि प्रान्तीय सरकार उत्पन्न माल को उतनी कीमत पर खरीदना स्वीकार करे जितनी कि स्थानिक संस्थाएं और सरकार मिलकर, सामग्री की कीमत और उस पर लगी हुई मजदूरी के आधार पर तय करें, जिससे कि स्थानिक संस्थाओं को कोई नुकसान न पहुंचे।

(२) चूंकि मध्यप्रान्त और बरार की स्थानिक संस्थाओं की शालाओं में बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा को जारी करना जरूरी है और चूंकि तमाम स्थानिक संस्थाएं योजना के लिये आवश्यक खर्च उठाने में समर्थ नहीं है, इसलिये यह निश्चय किया जाता है कि प्रान्तीय सरकार उन स्थानिक संस्थाओं को, जिन्हें कि अपने स्कूलों में योजना को जारी करने के लिये खर्च की, या इस खर्च के कुछ हिस्से की जरूरत हो, रुपया पेशगी दे, या कि सालाना किस्तों में अदा कर दिया जाय।

बुनियादी तालीम का साहित्य

The Latest Fad (Basic Education)

लेखक-आचार्य जे० बी० कृपलानी; प्रकाशक-हिन्दुस्तानी तालीमी-संघ, सेगांव, वर्धा सी० पी०; पृष्ठ संख्या १०२; मूल्य १ रुपया।

आचार्य कृपलानीजी की यह पुस्तक हाल ही में प्रकाशित हुई है। नई तालीम को और उसकी तह में छिपे हुए उसूलों को नज़दीक से देखने और समझने के लिए जिस तरह की किताब की ज़रूरत पड़े-लिखे और तालीम के अपनकार ज़ेग महसूस करते थे वैसी ही यह किताब बनी है, इसमें कोई शक नहीं। इसको Latest fad या 'नये मन्थन' का नाम दिया गया है। गांधीजी ने हिंदुस्तान के बच्चों की तालीम के लिए जेग एक अनोखा रास्ता बना देखा है, और जिसका ऐलान उन्होंने देश के सामने किया है, उसको बड़े बड़े पंडितों ने भी शुरू में एक खूब ही समझा था। इस किताब की भूमिका में गांधीजी लिखते हैं कि आचार्य कृपलानी ने इसमें यह बताने का कोशिश की है कि उनके इस 'खूब' की नींव पक्की बुनियाद पर कायम है।

पूरी किताब कुल चौदह अध्यायों में समाप्त हुई है। शुरू में नई तालीम की योजना और उसके रहस्य को समझाने के लिए दो अध्याय लिखे गये हैं। अगले अध्याय में मनुष्य के विकास के साथ बुनियादी तालीम का जो संबंध रहा है, उसकी चर्चा की गई है। आगे के दो अध्यायों में शिक्षा के क्षेत्र में देश में और विदेशों में अबतक जो तरह-तरह के प्रयोग हुए हैं, उनका बुनियादी तालीम की दृष्टि से विचार और विश्लेषण किया गया है। छठे अध्याय में खूब के शिक्षासंबंधी प्रयोगों की चर्चा है और सातवें अध्याय में इन सब प्रयोगों का सिंहावलोकन करते हुए इनकी सफलता-असफलता के कारणों पर विचार किया गया है। अठारहवें अध्याय में जीवन-व्यापी शिक्षा और जीवन से अलग रहनेवाली शिक्षा के गुण-दोषों पर विचार हुआ है। नवें अध्याय में उस किताबी या लम्बी तालीम की बुझाई पर विचार किया गया है, जिसमें विद्यार्थी को निरे शब्दों और नारों पर निर्भर करना सिखाया जाता है, और जीवन की वास्तविकता से दूर रक्खा जाता है। दसवें अध्याय में बुनियादी तालीम के सामाजिक और नैतिक पहलू पर बड़ी ही सूक्ष्मता और स्पष्टता के साथ विचार किया गया है, और शिक्षा की दूसरी प्रणालियों के

साथ इस प्रणाली के गुण-दोषों की चर्चा भी की गई है। बारहवें अध्याय में बुनियादी तालीम के स्वावलंबन-वाले पहलू पर विचार हुआ है, और शिक्षा की दृष्टि से उसकी उपयोगिता और उसके औचित्य को कसौटी पर धेरा गया है। बारहवें अध्याय में बुनियादी तालीम के खान-खास उसूलों का जिक्र किया गया है। तेरहवें में बुनियादी तालीम की राह में खड़ी हुई कठिनाइयों की चर्चा है और उन मुश्किलों को आसान करने के तरीकों का थोड़ा इशारा भी है।

आखिर अध्याय इस किताब का सबसे बड़ा और महत्व का अध्याय है। इसमें गांधीजी की जीवन-योजना में बुनियादी तालीम के महत्व पर विद्वान् खूब अपने बहुत ही महत्वपूर्ण विचार प्रकट किये हैं। इस अध्याय पर अलग-अलग तीन हिस्सों में विचार हुआ है। पहले हिस्से में, पाठशाला, व्यक्ति और समाज का, दूसरे में गांधीजी के नवज्ञान का, और तीसरे में गांधीमार्ग की एकता का आँखे खोलनेवाला विश्लेषण मिलता है।

इस प्रकार इस छोटीसी पुस्तक में आचार्य कृपलानीजी ने बुनियादी तालीम के प्रेमियों, सेवकों और टीकाकारों के लिए सोचने, समझने और अमल में लाने योग्य इतनी महत्वपूर्ण बातों का समावेश कर दिया है कि अगर इसे 'गागर में सागर' भर देने की कुशलता कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। 'नई तालीम' के सभी पाठकों से हमारी प्रार्थना है कि वे इस किताब का एक बार ज़रूर पढ़ें और इसमें उठाये गये धीनों पर गंभीरता से सोचें। हिंदुस्तानी तालीमी संघ से हमारी प्रार्थना है कि वे इस उपयोगी पुस्तक का हिंदी अनुवाद भी ज़ल्दी से तल्दी प्रकाशित करवायें, ताकि सिर्फ हिंदी जाननेवाले पाठक इसके लाभ से वंचित न रह जायें।

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
सेगांवमें गांधी जयंती	१
बुनियादी तालीम की यात्रा	२
युवतंत्रांतमें बुनियादी तालीम	३
समाज के अभ्यास के पाठ्यक्रम का एक प्रयोग	४
मध्यम श्रेणी में बुनियादी तालीम	७
बुनियादी तालीमका साहित्य	८

मूल्य

मूल्य अंक	४-२-०	डाक्टर-अध्यय सहित
वाणिज्य	१-४-०	

नई तालीम

[हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का मुखपत्र]

संपादिका — आशा देवी

भाग १

दिसंबर, १९३९

संख्या १२

प्रथम बुनियादी राष्ट्रीय तालीम परिषद, पूना (१९३९) को

गांधीजी का सन्देश

मुझे आनंद है कि पूना परिषद् नई तालीम के नयेपन को पूरी तरह स्वीकार कर रही चलेगी। जैसे राष्ट्रीय प्रयोग में हम काम ज्यादा नहीं कर सकते ऐसे ही इस प्रयोग में समझना चाहिए। नई तालीम का नयापन यह है कि तालीम, कुछ भी हो, ग्राम उद्योग की भाँति ही हो। जहाँ मामूली तालीम में ग्राम उद्योग की भाँति ही काम नहीं चलेगा।

संगति (वर्धा)

मो. क. गान्धी

२८/१२/३९

परिषद् के अध्यक्ष का अभिभाषण

इस महत्वपूर्ण परिषद् का सभापति ग्रहण करने के लिये आपन्नित करके आपने एक अयोग्य आदमी का सम्मान किया है, इस कृपा के लिये मैं आभारी हूँ। इस आसन को ग्रहण करने का अधिकार मुझे बहुत ही कम है—केवल इतना ही कि मैं भी अन्य तालीमी कार्यकर्त्यों की तरह, बुनियादी तालीम की मुखारक तहरीक में असूली और झुली दिलचस्पी ले रहा हूँ।

और भाग्य ने मेरे कार्य को और भी सरल बना दिया है; क्योंकि मुझे इस योजना का प्रयोग जम्मू और काश्मीर की रियासतों में करना पड़ा है, और यह रियासतें—खास कर काश्मीर—कम अज कम इस लिहाज में हिन्दुस्तान के अन्य हिस्सों से कुछ फायदे में हैं। दस्तकारी और कलकरी, चिरकाल से, काश्मीरियों के जीवन का एक विशेष अंग बन चुके हैं और इनमें जो निपुणता उन्होंने हासिल कर ली है उसकी तारीफ सारा संसार करेगा है। इस लिये ऐसे लोगों की नजरों में दस्तकारी द्वारा शिक्षा देने के सिद्धान्त में कोई अनोखापन नहीं है, जो न ही इसमें कोई ऐसी समस्या है जो आसानी से उसकी समझ में आजाय। हमारे विविध स्कूलों

जो शिक्षक तय्यार होकर निकले हैं उनके उरसाह से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ और मेरा यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया है कि इस योजना के मूल सिद्धान्त मजबूत और सुनतसिब हैं।

जिस कारण से मुझे इस परिषद् का सभापति बनना पड़ रहा है वह अत्यन्त खेदपूर्ण है, और मुझे विश्वास है कि उसपर अफसोस जाहिर करने से आप मेरा समर्थन करेंगे। मेरा अभिप्राय डाक्टर जाकिर हुसैन साहब की अनिवार्य अनुपस्थिति से है, जो कि हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के सभापति हैं और जिन्होंने, महात्मा गांधीजी से प्रेरणा पाकर, इस तहरीक को अपनी योग्यता द्वारा सुफल और सत्रांगपूर्ण बनाया है। उनकी गैर-हाजिरी से जो स्थान खाली रह गया है उसकी पूर्ति करने की क्षमता हममें से किसीमें भी नहीं है। मेरी, और मुझे यकीन है कि आपकी भी, हार्दिक प्रार्थना है कि वह जल्दी से जल्दी भारत लौटने में समर्थ हों और इस तहरीक के नेतृत्व को फिर से हाथ में लें, जो कि वास्तव में उनकी ही तहरीक है।

आज हम एक ऐसे समय में इकट्ठे हो रहे हैं जब कि राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय परिस्थिति एक अमृतपूर्व विकटता धारण किये खड़ी है। पश्चिमी सभ्यता, अपनी उन विशेष शक्तियों से, जो उसके अस्तित्व के ही अन्तर्निहित हैं, खिंची हुई एक भाषण संवर्ष में आ बड़ी है। वह सभी शक्तियाँ, जो वैज्ञानिक विकास ने मनुष्य को उसके कल्याण के लिये इतनी उदारता से प्रदान की थीं, अब सभ्यता के विध्वंस और कमजोर राष्ट्रों की स्वतन्त्रता को हड़प करने के लिए इस्तेमाल हो रही हैं। मनुष्य की विमर्श सिर्फ इस काम में जुट गया है कि वह मृत्यु और विनाश के भयंकर से भयंकर वाहन तय्यार करे। लाखों करोड़ों मनुष्यों के व्यक्तित्व को कुचकर नापीवाद ने जो ताकत अपनी बाँधी, न सोचि की उसके खुमार में आकर वह अपने पड़ोसियों को निगल जाने के लिये उठ खड़ा हुआ है; और लोकतन्त्रवादी राष्ट्र, कुछ हद तक अपनी चिर-संगित न्याय और धर्म की भावनाओं से, और कुछ

३ जुलाई को मध्यप्रांत के प्रधान मंत्री माननीय पं. रविशंकरजी शुक्ल के हाथों इस संस्था का उद्घाटन हुआ। इस सत्र में नार्मल स्कूल के २९ शिक्षक और स्कूल के २९ शिक्षक दाखिल किये गये हैं। जबलपुर के स्पेन्स ट्रेनिंग स्कूल के अध्यापक श्री. मैकिलन इस इन्स्टीट्यूट के अध्यक्ष नियुक्त किये गये हैं। पूरी शिक्षा मातृभाषा में दी जायगी।

बॉम्बे ट्रेनिंग स्कूल, पटना

१ अगस्त से इस ट्रेनिंग स्कूल का दूसरा सत्र शुरू हुआ है। कुल ६० विद्यार्थी दाखिल किये गये हैं। शिक्षाक्रम जुलाई से दिसंबर तक ६ महिने का रखवा गया है। इस साल विद्यार्थियों के चुनाव में इस बात की खास कोशिश की गई है कि चुने हुए विद्यार्थी बुनियादी तालीम की मोरी बातों से परिचित हों, और वे हिंदुस्तानी और कन्नड़ दोनों में कुशल हों। पाठ्यक्रम और कार्यक्रम पहले वर्ष का सा ही रहेगा। बुनियादी तालीम की वैष्णव के साथ साथ प्रौढ़ अनपढ़ों को पढ़ाने के तरीके भी विद्यार्थी तैयार किये जाएंगे।

गुजरात

बंबई सरकार ने गुजरात में बुनियादी तालीम के खास प्रयोग के लिए सूरत जिले के वालोड तहसील को चुना है। और १५ देहाती मदरसों में बुनियादी तालीम का काम शुरू हुआ है। बंबई सरकार की ओर से ता. १२ जून से सूरत से तीन मील दूर कतारगाम बांव के देहत में भी एक नया अध्यापन-मंदिर खोला गया है और प्रांत भर से ४६ शिक्षक इस केंद्र में तालीम पा रहे हैं।

साथ साथ सूरत जिले के थोडली आश्रम में श्री जुगतराम देव की देखरेख में सूरत के डि. स्कूल बोर्ड की ओर से बुनियादी तालीम का और एक अध्यापन-केंद्र चलाया जा रहा है।

महाराष्ट्र तिलक राष्ट्रीय-विद्यापीठ

महाराष्ट्र में बुनियादी तालीम का जो प्रयोग शुरू हुआ उसमें तिलक राष्ट्रीय विद्यापीठ भी सहयोग दे रही है। हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की ओर से वर्षों में जनवरी में जिस संक्षिप्त शिक्षाक्रम का प्रचार किया गया था उसमें तिलक राष्ट्रीय विद्यापीठ के दो अध्यापक भी उपस्थित थे। उसके बाद बंबई सरकार की ओर से खोली में महाराष्ट्र के लिए जिस अध्यापन-मंदिर की स्थापना की गई उसके काम में तिलक राष्ट्रीय-विद्यापीठ के अध्यापकों ने भी सहायता की और ट्रेनिंग स्कूल में विद्यापीठ की ओर से २० शिक्षक तैयार किये गये।

इन शिक्षकों की सहायता से १ जुलाई से पूना जिले के ४ देहाती ४ बुनियादी स्कूल खोले गये हैं और तिलक राष्ट्रीय-विद्यापीठ की देखरेख में यह प्रयोग चलाया जा रहा है।

तामिलनाडु को-मैट्रिक

दक्षिण भारत में मद्रास सरकार की ओर से अब तक इस तालीम की दिशामें कोई प्रयोग शुरू नहीं हुआ था। खुश की बात है कि १ जुलाई को मद्रास के शिक्षा मंत्री माननीय श्रीयुत वाकी के हाथों से तामिलनाडु में सबसे पहिले बुनियादी तालीम के अध्यापन-मंदिर की स्थापना हुई। इस ट्रेनिंग स्कूल का उद्घाटन करते हुए श्री वाकीने कहा कि बुनियादी तालीम की पहली संस्था का उद्घाटन भरे हाथों से ही हुआ। आज हम सिर्फ एक नई संस्था नहीं खोल रहे हैं-पर इस राष्ट्र के शिक्षा का इतिहास में एक नया अध्याय शुरू करते हैं। क्यों कि यह नई शिक्षा की योजना धीरे धीरे मौजूदा शिक्षा-प्रवृत्ति का स्थान लेगी ऐसी कल्पना है।

आंध्र-जातीय कलाशाला मछलीपट्टन

तामिलनाडु के लिये एक नया अध्यापन केंद्र खोलने के साथ साथ मद्रास सरकार ने आंध्र-जातीय कलाशाला के अध्यापन-मंदिर को आंध्र देश के बुनियादी तालीम के शिक्षकों की तैयारी के लिये तैयार कर दी है। ता. २० जुलाई को आंध्र जातीय कलाशाला में इसके नये सत्र का प्रारम्भ हुआ। हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के मंत्री श्रीयुत आर्यनायक भी इस अवसर पर उपस्थित थे। पिछले साल के जो शिक्षक इस प्रयोग के लिये उपयुक्त समझे गये थे, इस अवसर पर उन्हें तपाधि-पत्र वितरण किये गये। इस नये सत्र के लिये आंध्र देश के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्युनि-सिपालिटीबों से कुल ५६ विद्यार्थी दाखिल किये गये हैं।

विषय-सूची

१ शिक्षकों की कठिनाइयां	सहायिका
२ बुनियादी तालीम का अनुभव	श्री पद्मराम
३ तालीम कतार की गलतियों को नोंद	श्री बल्लभभाई
४ शिक्षकों की तैयारी	श्री आर्यनायक
५ बुनियादी तालीम की प्रगति	

मूल्य

एक अंक	०-२-०	डाक व्यय सहित
वार्षिक	१-४-०	

10/19-2000

111352

